नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 384, नई दिल्ली, मंगलवार 24 मार्च 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

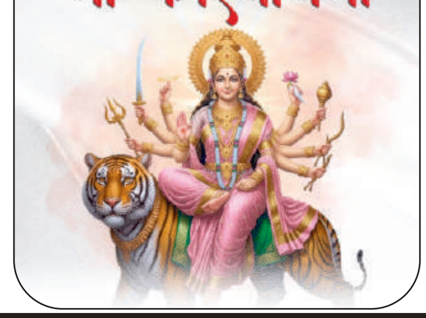

03 चेन्नई में ऐतिहासिक क्षण: श्री जम्बु महर्षि ध्वज एवं चित्र का भव्य विमोचन...
06 डिजिटल डस्ट: हमारे ऑनलाइन जीवन की अनदेखी छाया
08 ECoR ने ट्रेन सुरक्षा सुनिश्चित करने में असाधारण सतर्कता के लिए दो रेल...

परिवहन विशेष — देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र
India's First Leading English Transport Newspaper — parivahanvishesh
NEWS NTV TRANSPORT VISHESH — www.newstransportvishesh.com

3RD

PARIVAHAN VISHESH CONCLAVE - 2026
&
EXCELLENCE AWARD CEREMONY

Sunday, 29TH March 2026, 01:00 pm Onwards
Mavlankar Hall, Constitutional Club, New Delhi - 110001

VALUABLE THOUGHTS & SUGGESTIONS IN THE CONCLAVE IN THE AREAS OF:

CLIMATE CHANGE & POLLUTION • VEHICULAR ACCIDENTS & TRAFFIC JAM • CYBER CRIME • WOMEN SAFETY

Chief Guest

Hon'ble Mr. Justice Rajesh Tandon
Former Judge, Uttarakhand High Court
Presiding judge, Daily Lok Adalat Nainital High Court UK

Guest of Honour

Dr. Anirban Hom Choudhuri
Director Professor & HOD (Critical Care)
VMCC & Safdarjung Hospital New Delhi

Dr. C.B. Tripathi
HOD Department of Biostatistics (IHBAS)

Mr. Nitin Pramod IFS
Director in the Ministry of External Affairs, Delhi

Dr. Adish C Aggarwala
President, International Council of Jurists, London
Ex. President, Supreme Court Bar Association
Ex. Vice-Chairman, Bar Council of India

SANJAY BATHLA, Editor in Chief - +91 95992 32095

K.K. Chhabra	Abhishek Rajput	Anil Bathla	Pinki Kundu
9910234578	8392802013	8929529587	7053533169

TRANSPORT VISHESH NEWS LIMITED
www.newsparivahan.com, www.newstransport.in

विटामिन C का खजाना: आपकी रोज़ाना की इम्यूनिटी बूस्टर डाइट

जैसा कि इस चित्र में दिखाया गया है, प्रकृति ने हमें विटामिन C से भरपूर कई शानदार फल और सब्ज़ियां दी हैं। अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमता (इम्यूनिटी) बढ़ाने और स्वस्थ त्वचा पाने के लिए, इन चीज़ों को अपने दैनिक आहार में सही तरीके से शामिल करें:

सब्ज़ियां (Vegetables):

ब्रोकोली (Broccoli):

कैसे: इसे हल्का स्टीम (भाप में पकाना) करके खाएं ताकि इसके पोषक तत्व बचे रहें। इसे सलाद या सूप में भी डाल सकते हैं।

कब: दोपहर या रात के भोजन में सब्जी के रूप में।

कितना: एक मध्यम कटोरी।

पालक (Spinach):

कैसे: हल्की पकी हुई सब्जी, दाल में, या कच्ची पत्तियों को स्मूदी में इस्तेमाल करें।

कब: दोपहर के भोजन में शामिल करना सबसे अच्छा है।

कितना: एक कटोरी पकी हुई पालक (हफ्ते में 3-4 बार)।

लाल शिमला मिर्च (Red Bell Pepper):

कैसे: कच्ची सलाद में सबसे ज्यादा फायदा मिलता है। हल्की भूनकर भी खा सकते हैं।

कब: लंच या डिनर में सलाद के हिस्से के रूप में।

कितना: आधी से एक शिमला मिर्च।

टमाटर (Tomato):

कैसे: कच्चा सलाद, सैंडविच में, या सब्जी/सूप में पकाकर।

कब: किसी भी मुख्य भोजन के साथ।

कितना: 1-2 मध्यम आकार के टमाटर।

फल (Fruits):

कीवी (Kiwi):

कैसे: छीलकर या चम्मच से स्कूप करके कच्चा खाएं।

कब: सुबह नाश्ते में या दिन में स्नैक के तौर पर।

कितना: दिन में 1-2 कीवी।

अनानास (Pineapple):

कैसे: ताज़ा काटकर कच्चा खाएं या फ्रूट सलाद में मिलाएं।

कब: दोपहर के भोजन से पहले या शाम को स्नैक के रूप में।

कितना: एक छोटी कटोरी कटे हुए टुकड़े।

संतरा (Orange):

कैसे: साबुत फल खाना सबसे अच्छा है (फाइबर के लिए)। ताज़ा जूस भी पी सकते हैं (बिना चीनी)।

कब: सुबह नाश्ते में या दोपहर में।

कितना: 1-2 संतरे या एक गिलास जूस।

पपीता (Papaya):

कैसे: पका हुआ पपीता काटकर कच्चा खाएं। इसमें नींबू का रस डालने से स्वाद और विटामिन C दोनों बढ़ते हैं।

कब: सुबह नाश्ते के लिए यह एक बेहतरीन विकल्प है।

कितना: एक मध्यम कटोरी।

अमरूद (Guava):

कैसे: इसे अच्छी तरह धोकर, बिना छीले कच्चा खाएं। छिलके में भी बहुत विटामिन C होता है।

कब: दिन में किसी भी समय स्नैक के रूप में।

कितना: 1-2 मध्यम आकार के अमरूद।

बेरीज़ (Berries):

रास्पबेरी (Raspberries):

कैसे: ताज़ा खाएं, या दही, ओट्स, या स्मूदी में मिलाएं।

कब: नाश्ते में या स्नैक के तौर पर।

कितना: आधा से एक कप।

काली किशमिश (Black Currants):

कैसे: ताज़ा या सूखी हुई (किशमिश) खा सकते हैं। इन्हें भी दही या सेरेल्स में मिला सकते हैं।

कब: नाश्ते के साथ या स्नैक में।

कितना: एक छोटी मुट्ठी।

सलाह: विटामिन C पानी में घुलनशील होता है और शरीर इसे स्टोर नहीं करता, इसलिए इसे रोज़ाना अपने भोजन में शामिल करना ज़रूरी है। ज़्यादा पकाने से विटामिन C नष्ट हो सकता है, इसलिए इन चीज़ों को कच्चा या कम पकाकर खाना बेहतर होता है।

हीमोग्लोबिन बढ़ाने के सरल प्राकृतिक उपाय

❖ क्या बिना ज्यादा काम के भी थकान, चक्कर या कमजोरी महसूस होती है?

◆ **विज्ञान दृष्टि**

हीमोग्लोबिन ऑक्सीजन पहुँचाता है।

यह कम होने पर कमजोरी और चक्कर आते हैं।

सामान्य स्तर: पुरुष 13–17 g/dL, महिलाएँ 12–15 g/dL।

◆ **आयुर्वेद दृष्टि**

यह रक्त धातु की कमी और कमजोर पाचन अग्नि का संकेत है।

❖ **प्राकृतिक देखभाल**

◆ 1. हरी सब्जियाँ व सीमित गुड़ का सेवन करें।

◆ 2. भोजन के बाद तुरंत चाय या कॉफी न लें।

◆ 3. सुबह हल्की धूप लें और शरीर सक्रिय रखें।

◆ 4. लोहे की कड़ाई में बना भोजन आयरन के अवशोषण में सहायक होता है।

❖ **जड़ी-बूटी मिश्रण**

* आंवला — 30 ग्राम (आयरन अवशोषण व रक्त पोषण)
* गिलोय — 10 ग्राम (रक्त शुद्धि व पोषण अवशोषण)
* अश्वगंधा — 20 ग्राम (शक्ति व पुनर्निर्माण)
* शतावरी — 15 ग्राम (रक्त व शरीर पोषण)
* पुनर्नवा — 10 ग्राम (रक्त धातु वर्धन)

कुल — लगभग 85 ग्राम

सभी को दरदरा कूटकर चूर्ण बनाएं।

◆ **ध्यान रखें:**

* चूर्ण बहुत महीन न हो, हल्के कण बने रहें।
* तैयार चूर्ण को काँच के सूखे एयरटाइट जार में सुरक्षित रखें।

❖ **सेवन विधि**

◆ पहले 7 दिन: *

- चौथाई छोटा चम्मच, सुबह खाली पेट लें।

◆ इसके बाद:

- आधा छोटा चम्मच, सुबह लें।
- आधा छोटा चम्मच, शाम लें।
- भोजन से 30 मिनट पहले लें।
- गुनगुने पानी के साथ लें।
- जिन्हें दूध पचता हो, वे इसे गुनगुने दूध के साथ भी ले सकते हैं।

◆ भोजन के बाद थोड़ी मात्रा में गुड़ अवश्य लें। *

- लगभग 35 दिन उपयोग करें, फिर 5–7 दिन का विराम लें।

❖ आज का प्राकृतिक अभ्यास

- सुबह 10 मिनट धूप में बैठें: रक्त निर्माण में सहायक।
- गहरी साँस लें: ऑक्सीजन स्तर बेहतर होता है।
- रोज 10–15 मिनट हल्का चलें: रक्त प्रवाह सक्रिय होता है।

❖ विशेष ध्यान

* यह सामान्य स्वास्थ्य मार्गदर्शन है; गंभीर स्थिति में जाँच कराएँ।
* गर्भवती व स्तनपान कराने वाली महिलाएँ चिकित्सक की सलाह से उपयोग करें।
* उच्च रक्तचाप, थायरॉइड या अन्य समस्या में चिकित्सक से परामर्श लें।
* गुर्दे की समस्या में सावधानी रखें।
* निर्धारित मात्रा से अधिक सेवन न करें।

▪ कोई भी उपचार अपनाने से पहले अपने आयुर्वेदिक चिकित्सक या विशेषज्ञ से परामर्श (सलाह) करना अत्यधिक अनुशंसित (जरूरी) है।

▪ सभी सुखी और निरोगी रहे

स्नेह वंदन
आयुर्वेदिक स्वास्थ्य परिवार

सिर के नीचे तकिया न रखना सेहत के लिए बहुत अच्छा है

ज़्यादातर लोग सोते समय सिर के नीचे तकिया रखते हैं। कुछ लोग बिना तकिये के सो नहीं पाते। लेकिन ऐसा करना सेहत के लिए नुकसानदायक है।

सिर के नीचे तकिया न रखकर सोने से शरीर को कई फायदे होते हैं। अगर आप अच्छी सेहत बनाए रखना चाहते हैं, तो नीचे दिए गए टिप्स अपनाएं।

❖ **रीढ़ की हड्डी के लिए आराम:**

अगर आपकी रीढ़ की हड्डी में लंबे समय से दर्द हो रहा है, तो कुछ दिनों तक बिना तकिये के सोने की कोशिश करें। तकिया इस्तेमाल करने से गर्दन और रीढ़ की हड्डी में तनाव बढ़ता है। इससे अक्सर गर्दन की समस्याएं होती हैं।

इसलिए, तकिया न इस्तेमाल करना एक अच्छा ऑप्शन हो सकता है।

बिना तकिये के सोने से रीढ़ की हड्डी की पोज़िशन सही रहती है, जिससे दर्द और तनाव कम होता है।

◆ **स्किन के फायदे:**

लगातार तकिया इस्तेमाल करने से स्किन पर झुर्रियां पड़ सकती हैं। क्योंकि तकिया चेहरे पर दबाव डालता है। जो लोग तकिया इस्तेमाल नहीं करते उन्हें यह समस्या नहीं होती। तकिया इस्तेमाल न करने से पिंपल्स की समस्या भी कम हो जाती है। क्योंकि तकिए का कवर हमेशा धोया नहीं जाता, इसलिए उसमें मौजूद धूल के कण चेहरे पर पिंपल्स का कारण बनते हैं।

◆ **गर्दन का दर्द:**

जब हम तकिया इस्तेमाल करते हैं, तो हमारी रीढ़ की हड्डी की पोज़िशन बदल जाती है। ऐसे में, कमर दर्द की समस्या लगातार होने लगती है।

साथ ही, बिना तकिये का इस्तेमाल किए सोने से गर्दन सही दिशा में रहती है और इससे कमर दर्द का खतरा भी खत्म हो जाता है।

◆ **अच्छी नींद आती है:**

सिर के नीचे तकिया रखकर सोने से अक्सर कुछ लोग थक जाते हैं। इसका मतलब है कि उन्हें अच्छी और पूरी नींद नहीं आती है। जब कोई व्यक्ति बिना तकिये का इस्तेमाल किए सोता है, तो उसे अच्छी नींद आ सकती है।

साथ ही, कुछ और समस्याएं भी खत्म हो जाती हैं। पूरी नींद के बाद, वे निश्चित रूप से फ्रेश महसूस करते हैं।

◆ **मेंटल हेल्थ:**

अगर तकिया सही नहीं है, तो इससे नींद में खलल की समस्या हो सकती है। अगर आप तकिये का इस्तेमाल नहीं करते हैं, तो आपको अच्छी नींद आ सकती है। जिससे आपकी सारी थकान दूर हो जाती है, स्ट्रेस कम होता है।

बेशक, अगर स्ट्रेस और थकान नहीं है, तो मेंटल हेल्थ अच्छी रहती है।

❖ **अधिक लाभ:**

- बिना तकिये के सोने से शरीर की पोज़िशन सही रहती है, जिससे दर्द और तनाव कम होता है।
- बिना तकिये के सोने से स्किन की समस्याएं कम होती हैं, जैसे कि पिंपल्स और झुर्रियां।
- बिना तकिये के सोने से गर्दन और कमर दर्द का खतरा कम होता है।
- बिना तकिये के सोने से अच्छी नींद आती है, जिससे शरीर और मन को आराम मिलता है।
- बिना तकिये के सोने से मेंटल हेल्थ अच्छी रहती है, जिससे स्ट्रेस और थकान कम होती है।

▪ सभी सुखी और निरोगी रहे

स्नेह वंदन
आयुर्वेदिक स्वास्थ्य परिवार

विभिन्न संस्कृतियों और युगों के अनेक दार्शनिकों, आध्यात्मिक गुरुओं तथा मानवतावादियों के विचारों के अनुसार, आध्यात्मिकता अच्छे स्वास्थ्य, स्थायी सुख और गहन आंतरिक शांति प्राप्त करने का एक सार्थक मार्ग हो सकती है।

यद्यपि अलग-अलग परंपराओं में आध्यात्मिकता के रूप भिन्न हो सकते हैं, फिर भी इसका मूल उद्देश्य प्रायः आत्म-जागरूकता का विकास, नैतिक जीवन-शैली का पालन, तथा मन, शरीर और व्यापक ब्रह्मांड के बीच संतुलन और सामंजस्य स्थापित करना होता है।

समग्र कल्याण के मार्ग के रूप में आध्यात्मिकता

आध्यात्मिकता व्यक्ति को केवल भौतिक उपलब्धियों से आगे बढ़कर मानव जीवन के गहरे आयामों की खोज करने के लिए प्रेरित करती है।

ध्यान, आत्मचिंतन, सजगता (माइंडफुलनेस), प्रार्थना तथा दूसरों के प्रति करुणामय सेवा जैसे अभ्यासों के माध्यम से आध्यात्मिक परंपराएँ व्यक्ति को आत्मबोध, भावनात्मक संतुलन और विचारों की स्पष्टता की ओर मार्गदर्शन करती हैं।

जब मन शांत और अनुशासित हो जाता है, तो अत्यधिक चिंता, क्रोध और भय कम होने लगते हैं। शांत और संतुलित मानसिक अवस्था शरीर की शारीरिक क्रियाओं को अधिक स्वस्थ बनाए रखने में सहायक होती है।

इस प्रकार आध्यात्मिकता अप्रत्यक्ष रूप से समग्र स्वास्थ्य, तनाव से लड़ने की क्षमता और मानसिक स्थिरता को मजबूत करती है।

सकारात्मक मानवीय गुणों का विकास

आध्यात्मिकता का एक और महत्वपूर्ण योगदान सकारात्मक मानवीय मूल्यों का विकास है। अधिकांश आध्यात्मिक परंपराएँ निम्न गुणों पर विशेष बल देती हैं:

करुणा
कृतज्ञता
क्षमा
धैर्य
विनम्रता
सहानुभूति
दया और सद्भावना

ये गुण सामाजिक संबंधों को मजबूत बनाते हैं, आपसी संघर्षों को कम करते हैं और एक सामंजस्यपूर्ण तथा सहयोगात्मक समाज के निर्माण में सहायता करते हैं। जो व्यक्ति इन मूल्यों का अभ्यास करता है, वह प्रायः गहरे संतोष और भावनात्मक तृप्ति का अनुभव करता है।

आध्यात्मिक अभ्यास और मानसिक स्वास्थ्य का संबंध

पिछले कुछ दशकों में वैज्ञानिक अनुसंधानों ने यह समझने का प्रयास किया है कि आध्यात्मिक अभ्यास मस्तिष्क और मानसिक स्वास्थ्य को किस प्रकार प्रभावित करते हैं।

तंत्रिका विज्ञान, मनोविज्ञान और मन-शरीर चिकित्सा जैसे क्षेत्रों में ध्यान, माइंडफुलनेस और चिंतनशील अभ्यासों के प्रभावों का अध्ययन तेजी से बढ़ रहा है।

कई शोध यह संकेत देते हैं कि नियमित आध्यात्मिक अभ्यास:

चिंता और दीर्घकालिक तनाव को कम कर सकते हैं

भावनात्मक संतुलन को बेहतर बना सकते हैं

एकाग्रता और मानसिक स्पष्टता को बढ़ा सकते हैं

कठिन परिस्थितियों में मानसिक दृढ़ता को मजबूत कर सकते हैं

इन्हीं निष्कर्षों के आधार पर आधुनिक स्वास्थ्य सेवाओं, मनोचिकित्सा तथा वेलनेस कार्यक्रमों में माइंडफुलनेस और ध्यान आधारित तकनीकों को शामिल किया जाने लगा है।

आध्यात्मिकता और जीवन के अर्थ की खोज

शारीरिक और मानसिक लाभों से आगे बढ़कर आध्यात्मिकता मानव जीवन की एक गहरी आवश्यकता—जीवन के अर्थ और उद्देश्य की खोज—को भी संबोधित करती है।

जो व्यक्ति मानवता, प्रकृति या किसी उच्चतर चेतना के साथ जुड़ाव का अनुभव करता है, वह अक्सर गहरे आत्मिक संतोष, अपनत्व और पूर्णता की भावना महसूस करता है।

यह व्यापक दृष्टिकोण व्यक्ति को जीवन की चुनौतियों का सामना अधिक धैर्य, साहस और आंतरिक शक्ति के साथ करने में मदद करता है, जिससे जीवन अधिक शांत और संतुलित बन सकता है।

आधुनिक समाज में नवीन विकास

आधुनिक युग में वैज्ञानिक आधार पर समझी जाने वाली आध्यात्मिकता और धर्मनिरपेक्ष माइंडफुलनेस की ओर एक नई प्रवृत्ति उभर रही है। विश्वभर के विश्वविद्यालयों, अस्पतालों और शोध संस्थानों में ध्यान तथा चिंतनशील परंपराओं के प्रभावों का अध्ययन बढ़ रहा है।

आज कई स्वास्थ्य प्रणालियों में माइंडफुलनेस-आधारित तनाव-नियंत्रण कार्यक्रम और आध्यात्मिक परामर्श को पारंपरिक चिकित्सा के पूरक के रूप में शामिल किया जा रहा है।

साथ ही आधुनिक विचारक यह भी स्पष्ट करते हैं कि आध्यात्मिकता को सजगता, नैतिक जिम्मेदारी और वैज्ञानिक समझ के प्रति खुलेपन के साथ अपनाया जाना चाहिए, न कि अंधविश्वास के रूप में।

निष्कर्ष

जब आध्यात्मिकता को समझदारी और जिम्मेदारी के साथ अपनाया जाता है, तो यह जीवन के प्रति एक संतुलित दृष्टिकोण प्रदान करती है, जो शरीर, मन और आंतरिक चेतना—तीनों का पोषण करती है।

आत्म-जागरूकता, करुणा, भावनात्मक संतुलन और जीवन के उद्देश्य की भावना को विकसित करके, आध्यात्मिकता वास्तव में बेहतर स्वास्थ्य, सच्चे सुख और स्थायी आंतरिक शांति की दिशा में एक सार्थक मार्ग बन सकती है।

नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 384, नई दिल्ली, मंगलवार 24 मार्च 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

03 चेन्नई में ऐतिहासिक क्षण: श्री जम्बु महर्षि ध्वज एवं चित्र का भव्य विमोचन...
06 डिजिटल डस्ट: हमारे ऑनलाइन जीवन की अनदेखी छाया
08 ECoR ने ट्रेन सुरक्षा सुनिश्चित करने में असाधारण सतर्कता के लिए दो रेल...

चेन्नई में ऐतिहासिक क्षण: श्री जम्बु महर्षि ध्वज एवं चित्र का भव्य विमोचन, समाज में उत्साह की लहर

आस्था, परंपरा और एकता का अद्भुत संगम बना समारोह

परिवहन विशेष न्यूज

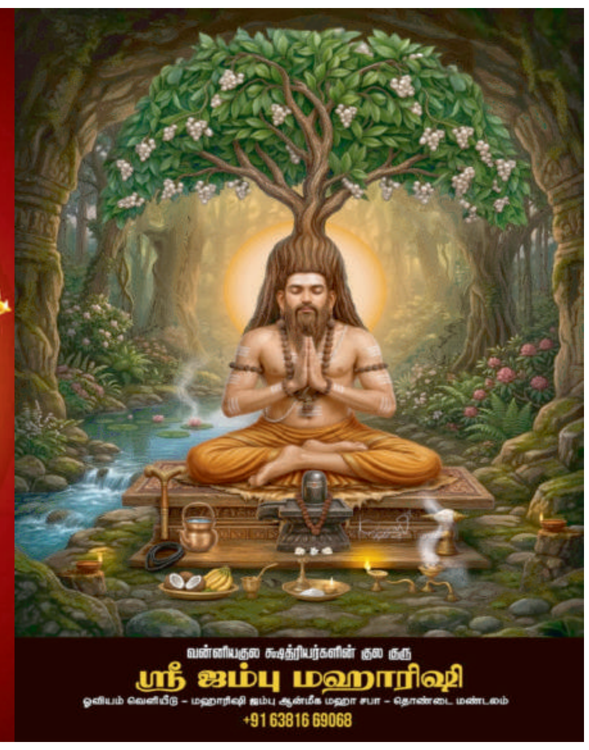

चेन्नई में वन्नियकुल क्षत्रिय समाज के लिए एक ऐतिहासिक और गौरवपूर्ण क्षण तब साकार हुआ, जब ईश्वर वंश से संबंधित कुलगुरु श्री जम्बु महर्षि के पावन ध्वज (झंडे) का परिचय एवं उनके पूर्ण रंगीन चित्र का विधिवत विमोचन अत्यंत भव्यता और श्रद्धा के साथ संपन्न हुआ। यह समारोह 22 मार्च 2026, रविवार को सायं 4:00 बजे चेन्नई नन्बरगल नला मंड्रम शाखा कार्यालय, कोयम्बेडु में आयोजित किया गया, जिसमें समाज की आस्था और सांस्कृतिक विरासत का अद्भुत प्रदर्शन देखने को मिला।

मुख्य अतिथि ने किया विमोचन, बताया ध्वज का आध्यात्मिक महत्व

इस गरिमामयी अवसर पर तिरुकलुकुन्द्रम के अगस्थ्य श्री अन्बुचेलियन अय्या मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। उन्होंने अपने करकमलों द्वारा श्री जम्बु महर्षि के रंगीन चित्र का अनावरण किया तथा ध्वज का परिचय कराते हुए उसके आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। उनके संबोधन ने उपस्थित जनसमूह को भावविभोर कर दिया।

आयोजन में पदाधिकारियों की अहम भूमिका

इस भव्य आयोजन का सफल संचालन महर्षि जम्बु आध्यात्मिक महासभा थोंडा मंडल के पदाधिकारियों—श्री K. चेल्लप्पा, श्रीमती M. पुनितावल्लि, मनमै K. सुन्दम नायकर एवं वेत्री रियल्स लायन L. वेलायुधम—द्वारा किया गया। उनके नेतृत्व, समर्पण और कुशल प्रबंधन ने समारोह को विशेष गरिमा प्रदान की।

विभिन्न क्षेत्रों से उमड़ा जनसैलाब, समाज की एकता का संदेश

कार्यक्रम में चेंगलपट्टु, तिरुकलुकुन्द्रम, गुडुवांचेरी, वेलाचेरी, कोयम्बेडु सहित आंध्र प्रदेश के श्रीशैलम से आए आयोजकों के साथ-साथ चेन्नई और आसपास के क्षेत्रों के अनेक आध्यात्मिक गणमान्य व्यक्ति, नन्बरगल नला मंड्रम के पदाधिकारी एवं सदस्य बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। सभी ने मिलकर इस आयोजन को सफल बनाया और समाज की एकजुटता का परिचय दिया।

सांस्कृतिक धरोहर को सहेजने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम

यह समारोह केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि वन्नियकुल क्षत्रिय समाज की समृद्ध परंपराओं, आध्यात्मिक मूल्यों और सांस्कृतिक पहचान को सहेजने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल के रूप में सामने आया। श्री जम्बु महर्षि के ध्वज और चित्र का विमोचन आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा तथा समाज को एक नई दिशा प्रदान करेगा।

अश्विनी वैष्णव ने तीन नई डिजिटल पहलों का किया अनावरण, एआई कौशल और कंटेंट इकोसिस्टम को मिलेगा बढ़ावा

संगिनी घोष

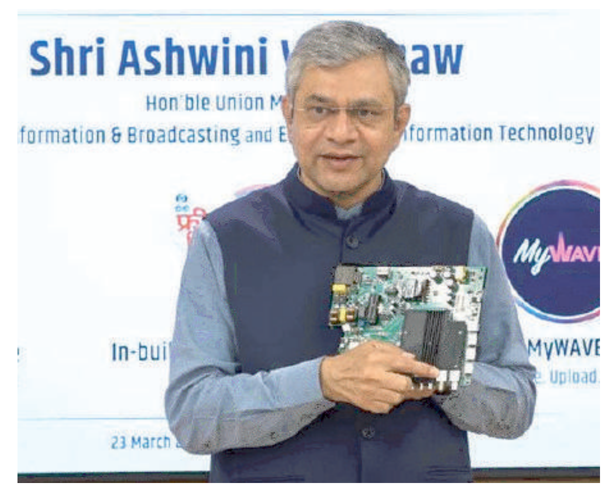

केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने देश में डिजिटल इकोसिस्टम को मजबूत बनाने के उद्देश्य से तीन महत्वपूर्ण पहलों का अनावरण किया। इन पहलों में सुलभ प्रौद्योगिकी, एआई कौशल विकास और कंटेंट निर्माण को बढ़ावा देने पर विशेष जोर दिया गया है।

इस अवसर पर YouTube के साथ साझेदारी में राष्ट्रीय एआई कौशल प्रशिक्षण पहल शुरू की गई, जिसके तहत 15,000 रचनाकारों और मीडिया पेशेवरों को मुफ्त प्रशिक्षण दिया जाएगा। इस पहल का उद्देश्य डिजिटल कौशल को बढ़ाना और युवाओं को नई तकनीकी संभावनाओं के लिए तैयार करना है।

इसके साथ ही सरकार ने MyWeaves प्लेटफॉर्म लॉन्च किया, जिसके माध्यम से नागरिक Waves OTT पर अपनी सामग्री बना और साझा कर सकेंगे। यह मंच आम लोगों को अपनी रचनात्मकता दिखाने और डिजिटल दुनिया में भागीदारी बढ़ाने का अवसर देगा।

इसके अलावा, डीडी फ्री डिश चैनलों तक पहुंच को और आसान बनाया गया है। अब दर्शकों को चैनल देखने के लिए सेट-टॉप बॉक्स की आवश्यकता नहीं होगी, साथ ही उन्नत प्रोग्राम गाइड और अंतर्निहित सुविधाएं भी उपलब्ध कराई गई हैं।

ऐसे देखें तो ये पहलें डिजिटल भारत के उस विजन को दर्शाती हैं, जहां तकनीक, रचनात्मकता और पहुंच सभी के लिए समान रूप से उपलब्ध हो।

मुख्य बिंदु

* केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने तीन डिजिटल पहलों का अनावरण किया
* YouTube के साथ एआई कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू
* 15,000 रचनाकारों को मिलेगा मुफ्त प्रशिक्षण
* MyWeaves प्लेटफॉर्म के जरिए नागरिकों को कंटेंट निर्माण का अवसर
* डीडी फ्री डिश चैनलों तक पहुंच हुई आसान, सेट-टॉप बॉक्स की जरूरत नहीं
* डिजिटल कंटेंट और तकनीकी पहुंच को मजबूत करने पर जोर

SEO Meta Description:

अश्विनी वैष्णव ने एआई प्रशिक्षण, MyWeaves प्लेटफॉर्म और डीडी फ्री डिश सुधार सहित तीन डिजिटल पहलों की घोषणा की, जिससे भारत के डिजिटल इकोसिस्टम को मजबूती मिलेगी।

दिल्ली में वाहनों से होने वाले प्रदूषण से निपटने में सरकार फेल

दिल्ली विधानसभा की लोक लेखा समिति (पीएसी) ने अपनी रिपोर्ट में राष्ट्रीय राजधानी में वाहनों से होने वाले वायु प्रदूषण से निपटने के सरकारी दावों की पोल खोली है। रिपोर्ट में प्रदूषण निगरानी, सार्वजनिक परिवहन की बदहाली और इलेक्ट्रिक वाहन नीति के धीमे क्रियान्वयन में गंभीर प्रणालीगत कमियों को उजागर किया गया है।

नई दिल्ली। दिल्ली विधानसभा की लोक लेखा समिति (पीएसी) ने राष्ट्रीय राजधानी में वाहनों से होने वाले वायु प्रदूषण से निपटने के सरकारी दावों की पोल खोल दी है। सोमवार को सदन में पेश अपनी तीसरी रिपोर्ट में, इस समिति ने प्रदूषण की निगरानी, सार्वजनिक परिवहन की बदहाली और उत्सर्जन मानकों को लागू करने में 'गंभीर प्रणालीगत कमियों' को उजागर किया है। यह रिपोर्ट 31 मार्च, 2021 को समाप्त हुए वर्ष के लिए सीएजी (कैग) द्वारा किए गए प्रदर्शन ऑडिट पर आधारित है। पीएसी ने परिवहन और पर्यावरण विभागों को इन खामियों को दूर करने के लिए तत्काल और समयबद्ध सुधारात्मक कार्रवाई करने का निर्देश दिया है।

प्रदूषण के आंकड़ों की विश्वसनीयता पर सवाल

समिति ने पाया कि दिल्ली में स्थापित कई 'कंटीन्यूअस एम्बिएंट एयर क्वालिटी मॉनिटरिंग स्टेशन" (सीएएक्यूएमएस) केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के मानकों का पालन नहीं कर रहे हैं। रिपोर्ट के अनुसार, ये स्टेशन सड़कों और पेड़ों के बहुत करीब हैं। इससे इनके द्वारा जुटाए गए आंकड़े और "एयर क्वालिटी इंडेक्स" (एक्यूआई) की सटीकता पर गंभीर संदेह पैदा होता है। हैरानी की बात यह है कि कई बार जरूरी प्रदूषकों का पूरा डेटा उपलब्ध न होने के बावजूद भी एक्यूआई की गणना की गई। समिति ने नोट किया कि राष्ट्रीय मानकों में शामिल होने के बावजूद किसी भी स्टेशन पर 'लेड' (सीसा) की मात्रा नहीं मापी जा रही थी।

सार्वजनिक परिवहन का बुरा हाल: 11 हजार की जगह सिर्फ 6,750 बसें

दिल्ली की परिवहन व्यवस्था पर प्रहार करते हुए पीएसी ने कहा कि शहर को लगभग 11,000 बसों की आवश्यकता है, लेकिन 2021 तक केवल 6,750 बसें ही उपलब्ध थीं। इनमें से भी एक बड़ी संख्या रखरखाव की कमी के कारण सड़कों से बाहर रही। रिपोर्ट के मुताबिक, दिल्ली में कुल 657 अधिसूचित रूटों में से 238 पर बसें नहीं चल रही थीं, जिससे "लास्ट माइल कनेक्टिविटी" की समस्या जस की तस बनी हुई है।

कागजों पर सिमटी इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) नीति

समिति ने दिल्ली सरकार की महत्वाकांक्षी ईवी नीति के क्रियान्वयन को भी 'सुस्त और बिखरा हुआ' बताया। आडिट अवधि के दौरान न तो 'ईवी बोर्ड' का गठन हुआ और न ही 'ईवी सेल' सक्रिय हुआ। चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर की कमी और पार्किंग प्रबंधन में खामियों ने प्रदूषण कम करने की कोशिशों को कमजोर किया है।

नियमों की अनदेखी और भ्रष्टाचार के संकेत

रिपोर्ट में पीयूसी (पीयूसीसी) प्रमाणपत्रों के वितरण में भी अनियमितता पाई गई। कई मामलों में बिना उचित टेस्ट वैल्यू के या मानक से अधिक धुआं छोड़ने वाले वाहनों को भी क्लीन चिट दे दी गई। इसके अलावा, दिल्ली में प्रवेश करने वाले बाहरी वाहनों का कोई ठोस डेटा उपलब्ध नहीं है और पुराने (उम्र पूरी कर चुके) वाहनों को कबाड़ करने की प्रक्रिया भी बेहद धीमी है।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

पिंकी कुंडू

आज का साइबर सुरक्षा विचार

महिलाओं के खिलाफ साइबर अपराध : गृह मंत्रालय के राज्य मंत्री श्री बंदी संजय कुमार ने लिखित उत्तर में बताया कि 2025 में महिलाओं के खिलाफ साइबर अपराध के 76,650 मामले दर्ज हुए, जो 2024 की तुलना में 28,322 अधिक हैं।

शिकायतों में शामिल प्रमुख अपराध :

अश्लील और आपत्तिजनक सामग्री का प्रसार
यौन क्रियाओं से संबंधित सामग्री
बलात्कार/सामूहिक बलात्कार से जुड़ी अपमानजनक सामग्री
बाल यौन शोषण सामग्री (CSEM)
ऑनलाइन पीछा करना, उत्पीड़न और दुर्व्यवहार

पाँच साल का रुझान (2021–2025) :
महिलाओं और बच्चों के खिलाफ कुल 9.54 लाख साइबर अपराध रिपोर्ट हुए।
सोशल मीडिया अपराधों में 140% वृद्धि (2021 में 72,301 से बढ़कर 2025 में 1,73,766 मामले)।

तेज़ी से बढ़ोतरी के कारण

1. इंटरनेट और स्मार्टफोन का बढ़ता उपयोग
2. सोशल मीडिया व मैसेजिंग प्लेटफ़ॉर्म पर फर्जी पहचान और उत्पीड़न
3. गोपनीयता और गुमनामी का दुरुपयोग
4. NCRP पोर्टल पर रिपोर्टिंग में वृद्धि
5. डार्क वेब नेटवर्क के कारण बाल यौन शोषण सामग्री का प्रसार
6. ऑफ़लाइन लैंगिक हिंसा की प्रवृत्ति का ऑनलाइन विस्तार

सरकारी उपाय

Indian Cyber Crime Coordination Centre (I4C) : जाँच और समन्वय को मज़बूत करना
जागरूकता अभियान : सुरक्षित डिजिटल व्यवहार पर ज़ोर
क्षमता निर्माण : पुलिस व जाँच एजेंसियों को साइबर फॉरेंसिक प्रशिक्षण
NCRP पोर्टल का विस्तार : बढ़ती शिकायतों को संभालने के लिए

प्रमुख चुनौतियाँ

सामाजिक कलंक और प्रतिशोध के डर से कम रिपोर्टिंग
छोटे राज्यों में विशेष साइबर इकाइयों की कमी
सीमापार अपराधों की जटिलता

महिलाओं के खिलाफ साइबर अपराध रोकने के उपाय

1. गोपनीय और आसान रिपोर्टिंग
महिला पुलिस कर्मियों द्वारा जाँच का प्रावधान
24x7 हेल्पलाइन और NCRP पोर्टल पर विशेष डेस्क
गुमनाम शिकायत दर्ज करने का विकल्प

2. कानून प्रवर्तन पर भरोसा
पुलिस को लैंगिक संवेदनशीलता प्रशिक्षण
महिला–विशेष साइबर डेस्क की स्थापना

3. समुदाय और NGO सहयोग
महिला अधिकार संगठनों के साथ साझेदारी
सीमापार सहयोग से बाल शोषण सामग्री पर रोक

4. प्लेटफ़ॉर्म की जवाबदेही
सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म को अपमानजनक सामग्री हटाने के लिए बाध्य करना
फर्जी अकाउंट्स पर सख़्त निगरानी
लापरवाही पर दंडात्मक कार्रवाई

5. तकनीकी समाधान
एआई आधारित निगरानी
NCRP पोर्टल से जुड़े हेल्पलाइन व रिपोर्टिंग ऐप्स
डिजिटल साक्षरता कार्यक्रम

6. जागरूकता और शिक्षा
स्कूल व कॉलेजों में अभियान
ग्रामीण क्षेत्रों में महिला कार्यशालाएँ
अपराधियों के लिए कड़ी सज़ा की जानकारी सार्वजनिक करना
पीड़ितों को रिपोर्ट करने के लिए प्रोत्साहित करना
सहायता समूहों का गठन
महिलाओं को कानूनों और अधिकारों की जानकारी देना
शिकायत दर्ज करने की स्टेप–बाय–स्टेप गाइड उपलब्ध कराना

निष्कर्ष

महिलाओं के खिलाफ साइबर अपराधों में तेज़ी से वृद्धि ऑनलाइन भागीदारी और रिपोर्टिंग में सुधार दोनों को दर्शाती है, लेकिन यह डिजिटल सुरक्षा और प्रवर्तन क्षमता की गंभीर कमी को भी उजागर करती है। जागरूकता, तेज़ जाँच और प्लेटफ़ॉर्म की जवाबदेही मज़बूत करना बेहद ज़रूरी है।

(अंधविश्वास, राजनीति और नैतिक पतन)

— डॉ. सत्यवान सौरभ

महाराष्ट्र महिला आयोग की तत्कालीन अध्यक्ष रूपाली चाकणकर द्वारा एक बलात्कार आरोपी ज्योतिषी अशोक खरात उर्फ कैप्टन के पैर धोने का दृश्य सोशल मीडिया पर फैलते ही पूरे देश में हंगामा मच गया। यह घटना केवल एक व्यक्तिगत चूक नहीं, बल्कि महिला सशक्तिकरण के नाम पर बने संस्थानों की आंतरिक कमजोरी का प्रतीक है। एक ऐसे व्यक्ति के चरणों में नतमस्तक होना, जिस पर 58 महिलाओं के यौन शोषण, गुप्त कैमरे लगाने और नशीले पदार्थों के माध्यम से अंधविश्वास का लाभ उठाने के आरोप हैं, नारीवाद के सिद्धांतों पर गहरा आघात है। मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस के निर्देश पर चाकणकर ने 20 मार्च 2026 को इस्तीफा दे दिया, लेकिन प्रश्न बना हुआ है—क्या यह राजनीतिक नियुक्ति प्रणाली का परिणाम है?

भारतीय संदर्भ में महिला आयोग राज्य स्तरीय संस्थाएँ हैं, जो संविधान के अनुच्छेद 15 और 39 के अंतर्गत महिलाओं के अधिकारों की रक्षा के लिए स्थापित की गई हैं। लेकिन जब इन संस्थाओं का प्रमुख स्वयं एक आरोपी के प्रति श्रद्धा दिखाए, तो पीड़ित महिलाओं का विश्वास कैसे बनेगा? नासिक पुलिस ने खरात के फार्महाउस से 58 आपत्तिजनक वीडियो बरामद किए, जो यह सिद्ध करते हैं कि अंधविश्वास कितना खतरनाक हो सकता है। यह घटना हमें सामाजिक, राजनीतिक और कानूनी स्तर पर गंभीर चिंतन के लिए बाध्य करती है।

अशोक खरात कोई साधारण ज्योतिषी नहीं था। वह 'कैप्टन' के नाम से जाना जाता था, जो नेताओं से लेकर आम महिलाओं तक को अपनी कथित पूजा-पाठ और हस्तरेखा देखने के बहाने फंसाता था। पुलिस जांच में सामने आया कि उसने फार्महाउस पर गुप्त कैमरे लगाए थे, महिलाओं को नशीला पदार्थ पिलाया और उनका शोषण किया। पेन ड्राइव में 58 वीडियो मिले, जो उसके अपराधों के ठोस प्रमाण हैं। नासिक के पुलिस अधीक्षक ने बताया कि खरात की संपत्ति लगभग 200 करोड़ रुपये की है, जो शोषण के माध्यम से अर्जित की गई है।

भारत में अंधविश्वास का यह बाजार नया नहीं है। तंत्र-मंत्र, ज्योतिष और तथाकथित बाबाओं का प्रभाव ग्रामीण से शहरी क्षेत्रों तक फैला हुआ है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के आंकड़ों के अनुसार, 2024 में अंधविश्वास से जुड़े अपराधों में 15 प्रतिशत वृद्धि हुई है। खरात ने कई नेताओं के हाथ देखे, जिनमें रूपाली चाकणकर भी शामिल थीं। एक वीडियो में वे यह कहते हुए दिखाई देती हैं कि "आप जैसे महापुरुष दुर्लभ हैं।" यह श्रद्धा किस प्रकार अपराधी को संरक्षण देती है, यह गंभीर विचार का विषय है। राजनीतिक प्रभाव के कारण आरोपी को छूट मिली, जो व्यवस्था की खामियों को उजागर करता है।

रूपाली चाकणकर भारतीय जनता पार्टी की वरिष्ठ नेता हैं, जिन्हें महिला आयोग का अध्यक्ष बनाया गया था। वीडियो सामने आने के बाद विपक्ष ने उनके इस्तीफे की मांग की। उन्होंने 'व्यक्तिगत कारणों' से इस्तीफा दे दिया, परंतु विशेष जांच दल की जांच जारी है। क्या वे आरोपी की सहयोगी थीं? विपक्ष ने उन्हें सह-आरोपी बनाने की मांग की है। मुख्यमंत्री ने तत्काल इस्तीफे का निर्देश दिया, जो सराहनीय कदम है। यह घटना राजनीतिक नियुक्ति प्रणाली की समस्या को उजागर करती है, जहाँ योग्यता की बजाय वफादारी को प्राथमिकता दी जाती है।

महिला आयोग का उद्देश्य महिलाओं के अधिकारों की रक्षा करना है, लेकिन वास्तविकता अलग है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण के अनुसार, लगभग 30 प्रतिशत महिलाएँ घरेलू हिंसा का सामना करती हैं, लेकिन आयोगों तक पहुँचने वाली शिकायतें 5 प्रतिशत से भी कम हैं। इसका कारण जागरूकता की कमी, भय और राजनीतिक दबाव है। हरियाणा जैसे राज्यों में भी यही स्थिति है, जहाँ अंधविश्वास और बाबाओं का प्रभाव अधिक है और राजनीतिक नेता इन्हें वोट बैंक के लिए बढ़ावा देते हैं।

अंधविश्वास महिला शोषण का एक प्रमुख माध्यम बन चुका है। कई तथाकथित बाबा 'काला जादू हटाने' के नाम पर महिलाओं का शोषण करते हैं। शिक्षा के बावजूद अंधविश्वास का बढ़ना चिंताजनक है। संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत में लगभग 40 प्रतिशत लोग अंधविश्वास पर विश्वास करते हैं। महिला सशक्तिकरण के दावों के बीच यह एक विडंबना है।

कानून के अनुसार, भारतीय दंड संहिता की धारा 376, पोक्सो कानून और सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम ऐसे अपराधों को नियंत्रित करते हैं। फिर भी सजा की दर 30 प्रतिशत से कम है। त्वरित सुनवाई की कमी के कारण अपराधी खुले घूमते हैं। सर्वोच्च न्यायालय ने हुसैनाारा खातून मामले में त्वरित सुनवाई को संविधान के अनुच्छेद 21 का हिस्सा माना था।

महाराष्ट्र में विशेष जांच दल का गठन एक सकारात्मक कदम है, लेकिन पारदर्शिता आवश्यक है। सुझाव के रूप में महिला आयोगों को स्वायत्त बनाया जाना चाहिए, राजनीतिक नियुक्तियों को रोका जाना चाहिए, अंधविश्वास विरोधी कानून को मजबूत किया जाना चाहिए (जैसे झारखंड मॉडल), और डिजिटल माध्यमों से जागरूकता अभियान चलाए जाने चाहिए। साथ ही, पुलिस प्रशिक्षण में लैंगिक संवेदनशीलता को शामिल किया जाना चाहिए।

वैश्विक स्तर पर विश्व आर्थिक मंच की जेंडर गैप रिपोर्ट में भारत का स्थान 127वाँ है। ऐसी घटनाएँ अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नकारात्मक छवि प्रस्तुत करती हैं। अन्य देशों में #MeToo आंदोलन इसलिए सफल हुआ क्योंकि वहाँ की संस्थाएँ अधिक मजबूत थीं। भारत को भी इससे सीख लेनी चाहिए।

रूपाली चाकणकर प्रकरण एक आईना है, जो दिखाता है कि जब तक संस्थाएँ राजनीति की भेंट चढ़ती रहेंगी, तब तक महिला सुरक्षा केवल एक दावा बनी रहेगी। अंधविश्वास का अंत शिक्षा से और राजनीतिक दुरुपयोग का अंत सुधार से ही संभव है। समाज, सरकार और नागरिकों को मिलकर काम करना होगा, अन्यथा पीड़ितों की संख्या बढ़ती ही जाएगी।

(डॉ. सत्यवान सौरभ, पीएचडी (राजनीति विज्ञान), एक कवि और सामाजिक विचारक है।)

घरेलू गैस की आपूर्ति पूरी तरह सामान्य, घबराने की आवश्यकता नहीं: डीसी

- जिला की गैस एजेंसियों में स्टॉक की निरंतर निगरानी कर रही विभागीय टीमें
- डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने दी जानकारी

परिवहन विशेष न्यूज

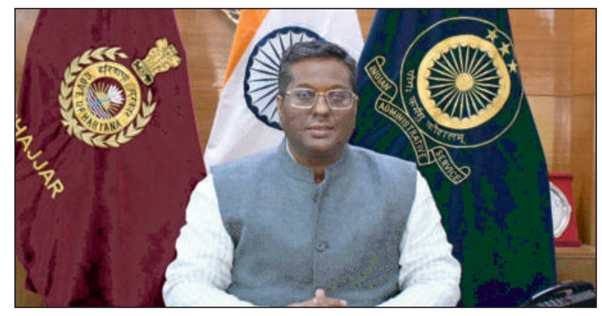

झज्जर, 23 मार्च।* जिला प्रशासन और खाद्य एवं पूर्ति विभाग उपभोक्ताओं को घरेलू गैस की सुचारू सेवा प्रदान करने के लिए पूरी तरह तत्पर है। यह जानकारी डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने दी।

उन्होंने आम उपभोक्ताओं को सूचित किया कि जिले में घरेलू एलपीजी (रसोई गैस) की उपलब्धता पूरी तरह से सामान्य है। विभाग द्वारा सभी गैस एजेंसियों में स्टॉक की निरंतर निगरानी की जा रही है और कहीं भी गैस की कोई किल्लत नहीं है।

डीसी ने स्पष्ट किया कि घरेलू सिलेंडरों का व्यावसायिक उपयोग पूरी तरह वर्जित है। विभाग की टीमें होटलों और रेस्टोरेंटों में निरंतर जांच कर रही हैं। यदि कोई एजेंसी निर्धारित दर से अधिक राशि वसूलती पाई जाती है, तो उसके खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

उन्होंने उपभोक्ताओं से अपील की कि वे किसी प्रकार का पैनिक न लें, प्रशासन द्वारा नियमानुसार गैस की आपूर्ति सुनिश्चित की जा रही है।

जिला में दो दर्जन से ज्यादा गैस एजेंसियां कार्यरत : डीएफएससी

जिला खाद्य आपूर्ति नियंत्रक राजेश्वर मुदगिल ने बताया कि जिलेभर में कुल 26 गैस एजेंसियां कार्यरत हैं, जिनके पास वर्तमान में लगभग 7 हजार 600 गैस सिलेंडरों का स्टॉक उपलब्ध है। सभी एलपीजी कंपनियों के माध्यम से नियमित आपूर्ति बनी हुई है और उपभोक्ताओं को बुकिंग के निर्धारित समय के भीतर रिफिल उपलब्ध करवाई जा रही है।

उन्होंने आगे बताया कि विभागीय निर्देशों के अनुसार आवश्यक सेवाओं और सामाजिक कार्यों के लिए व्यावसायिक गैस सिलेंडरों की निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित की गई है। विशेष रूप से शिक्षण संस्थानों, अस्पतालों तथा बेटियों की शादी जैसे महत्वपूर्ण कार्यों के लिए प्राथमिकता के आधार पर गैस उपलब्ध करवाई जाएगी, ताकि किसी भी आवश्यक सेवा में बाधा न आए।

उपभोक्ताओं की सुविधा के लिए कंट्रोल रूम स्थापित

उन्होंने बताया कि गैस उपभोक्ताओं की सुविधा और शिकायतों के त्वरित समाधान के लिए जिला मुख्यालय स्थित जिला खाद्य आपूर्ति नियंत्रक कार्यालय में एक विशेष कंट्रोल रूम स्थापित किया गया है, जिसका नंबर 01251-252516 है। कोई भी उपभोक्ता घरेलू गैस से संबंधित समस्या दर्ज करा सकते हैं।

शहीदी दिवस पर महान शहीदों को विनम्र श्रद्धांजलि

हिसार /हरियाणा (नरेश गुणपाल)

शहीद-ए-आज़म भगत सिंह, राजगुरु एवं सुखदेव के शहीदी दिवस के अवसर पर ज्ञान ज्योति सावित्रीबाई फुले पुस्तकालय में एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन संत शिरोमणि श्री गुरु रविदास सभा बालक (हिसार) द्वारा किया गया, जिसमें क्षेत्र के अनेक गणमान्य व्यक्ति, बुद्धजीवी, युवा एवं समाज के सम्मानित साथी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम के दौरान उपस्थित व्यक्तियों ने अमर शहीदों की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी। वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव का बलिदान देश के लिए अमूल्य है और उनका जीवन हमें हमेशा अन्याय के विरुद्ध खड़े होने तथा देश के प्रति समर्पित रहने की प्रेरणा देता है।

सभा में शहीदों के आदर्शों पर चलने और समाज में जागरूकता फैलाने का संकल्प भी लिया गया। कार्यक्रम का वातावरण पूरी तरह देशभक्ति से प्रेरित रहा।

सेवा का सूर्योदय, इतिहास का सूर्यास्त नहीं: मोदी ने रचा 'अमर महाकाव्य'

जब सेवा केवल कर्तव्य नहीं, बल्कि जीवन का सर्वोच्च उद्देश्य बन जाए, तब हर कदम इतिहास की सुनहरी धारा में अंकित हो जाता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वह अद्वितीय और प्रेरक शिखर छू लिया, जो पहले केवल कल्पनाओं और स्वप्नों में ही संभव प्रतीत होता था। गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में प्रारंभ हुई उनकी दूरदर्शी, संघर्षपूर्ण और प्रेरक यात्रा, और प्रधानमंत्री पद संभालने के बाद, आज वे भारत के सबसे लंबे समय तक निर्वाचित, आदरणीय और जनप्रिय सरकार प्रमुख बन चुके हैं। पूर्व सिक्किम मुख्यमंत्री पवन कुमार चामलिंग के 8,930 दिनों के रिकॉर्ड को पीछे छोड़ते हुए उन्होंने यह जीवंत और अभूतपूर्व संदेश दिया कि लोकतंत्र में जनता का विश्वास कितना अडिग, अपराजेय, अविचलनीय और प्रगाढ़ हो सकता है। यह कोई सामान्य उपलब्धि नहीं, बल्कि 8,931 दिनों की अनवरत निष्ठा, अथक परिश्रम, निस्वार्थ समर्पण, हृदयस्पर्शी जनसंपर्क और हर नागरिक के कल्याण की अपार प्रतिबद्धता का अनमोल प्रतीक है।

गुजरात के मुख्यमंत्री बनने के बाद से लेकर आज तक मोदी जी की हर सुबह नई चुनौतियों और नए संकल्पों से शुरू हुई। 2001 में जब उन्होंने राज्य की बागडोर संभाली, तब गुजरात आपदा और अराजकता के बीच जूझ रहा था। मात्र 13 वर्षों में उन्होंने उसे विकास का प्रतीक बना दिया – 'वाइब्रेंट गुजरात' से लेकर द्वीपों के कोनों तक बुनियादी ढाँचा, रोजगार और समृद्धि का ऐसा जाल बुन दिया, जो आज हर नागरिक के जीवन को छूता है। हर घर में बिजली, पानी, सड़क और स्वच्छता जैसी छोटी-छोटी बातें उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर पहुँचाकर 'सबका साथ, सबका विकास' का मंत्र साकार किया। 8,931 दिनों में उन्होंने कभी व्यक्तिगत आराम नहीं लिया, कभी परिवार की चिंता नहीं की, सिर्फ राष्ट्र और जनता की भलाई की। यही कारण है कि आज हर गाँव, हर शहर में उनका नाम 'विकास पुरुष' के रूप में गूँजता है।

26 मई 2014 को जब उन्होंने प्रधानमंत्री पद की शपथ ली, तब देश एक नए युग की दहलीज पर खड़ा था। 2019 और 2024 में लगातार जनता ने उन्हें चुनकर यह स्पष्ट कर दिया कि नेतृत्व में निरंतरता और दृढ़ता कितनी महत्वपूर्ण है। इन 4,319 दिनों के प्रधानमंत्रित्व में उन्होंने सिर्फ नीतियाँ नहीं बनाई, बल्कि करोड़ों जीवन संवार दिए। उज्ज्वला योजना से लेकर आयुष्मान भारत, जन धन योजना से लेकर डिजिटल इंडिया – हर योजना के पीछे छुपी है किसी गरीब परिवार, किसी किसान या किसी महिला की एक छोटी-सी उम्मीद और कहानी। 8,931 दिनों की इस सेवा में उन्होंने कभी राजनीतिक विरोध को बहाना नहीं बनाया, बल्कि हर चुनौती को अवसर में बदलकर दिखाया। यही उनका अद्वितीय और प्रेरक अंदाज है।

आज जब हम 8,931 दिनों की गिनती करते हैं, तो हर दिन अपने आप में एक प्रेरक, साहसिक और उत्थानकारी कहानी बन जाता है। कभी आतंकवाद के खिलाफ निर्णायक संघर्ष, कभी वैश्विक महामारी में टीकाकरण का अद्भुत चमत्कार, कभी आर्थिक संकट के समय आत्मनिर्भर भारत के आदर्श का नारा – हर घटना में नेतृत्व की दृढ़ता और दूरदर्शिता झलकती है। मोदी जी ने यह स्पष्ट कर दिया कि चुना हुआ नेता केवल सत्ता का प्रतीक नहीं, बल्कि निस्वार्थ सेवा, जनता के प्रति जिम्मेदारी और देशभक्ति का प्रतीक भी हो सकता है। उन्होंने पद की गरिमा कभी नहीं खोई, सत्ता के लालच में कभी नहीं डूबे। उनकी हर यात्रा, हर भाषण और हर निर्णय पूर्णतया जनता के हित और राष्ट्र के कल्याण के लिए रहा। छोटी-छोटी बातें – 'मैं हूँ ना' का भरोसा, 'मन की बात' में आम आदमी से सहज और सीधे संवाद – इन्हीं ने उन्हें हर नागरिक का अपना और पूरे देश का प्रेरक नेता बना दिया।

इस रिकॉर्ड के पीछे छिपा है अडिग संकल्प, अपराजेय इच्छाशक्ति और निस्वार्थ सेवा की प्रेरक भावना। 8,931 दिन मतलब 8,931 रातें जागना, 8,931 सुबहें नई उम्मीद, नई चुनौतियाँ और नए संकल्प लेकर उठना। उन्होंने कभी छुट्टी नहीं ली, कभी थकान को स्वीकार नहीं किया। गुजरात से दिल्ली तक की इस अद्वितीय और प्रेरक यात्रा में उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि लोकतंत्र में अगर इरादा मजबूत हो, तो कोई भी रिकॉर्ड असंभव नहीं है। आज भारत दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है, जी-20 की अध्यक्षता कर चुका है, और वैश्विक पटल पर 'विश्वगुरु' बनने की ओर अग्रसर है – यह सब 8,931 दिनों की अथक, निस्वार्थ और प्रेरक सेवा का परिणाम है।

लेकिन सबसे बड़ी बात यह है कि यह रिकॉर्ड केवल आंकड़ों का नहीं, बल्कि भावनाओं, विश्वास और जनता के प्रति सच्चे समर्पण का प्रतीक है। हर माँ, बहन, किसान और युवा आज महसूस करता है कि उनके लिए कोई है जो कभी नहीं रुकता, जो उनके सुख-दुःख में हर पल खड़ा रहता है। मोदी जी ने सत्ता को सेवा में बदल दिया। उन्होंने दिखाया कि चुना हुआ नेता केवल पद का अधिकारी नहीं, बल्कि जनता के लिए अडिग सहारा, मार्गदर्शक और प्रेरणा बन सकता है। 8,931 दिन की इस यात्रा में उन्होंने कभी व्यक्तिगत लाभ नहीं लिया, केवल राष्ट्र और जनता के हित को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। यही वजह है कि आज पूरा देश उन्हें श्रद्धा, सम्मान और गर्व के साथ सलाम करता है।

इस ऐतिहासिक और गौरवपूर्ण पल पर हमें गर्व होना चाहिए। 8,931 दिन का 'मोदी युग' केवल एक नेता की कहानी नहीं, बल्कि 140 करोड़ भारतीयों की सामूहिक आकांक्षा, उनके विश्वास, उनकी मेहनत और उनके सपनों की प्रेरक कहानी है। यह स्पष्ट करता है कि जब जनता का भरोसा अडिग और गहरा हो, तो कोई भी रिकॉर्ड असंभव नहीं। आगे भी यही निष्ठा, यही समर्पण और यही दूरदर्शिता भारत को नई ऊँचाइयों पर ले जाएगी। नरेंद्र मोदी ने इतिहास रच दिया है – अब आने वाली पीढ़ियाँ इस 'मोदी युग' को पढ़ेंगी, समझेंगी और सीखेंगी कि सच्ची सेवा, निस्वार्थ समर्पण और जनहित कभी थकते या रुकते नहीं।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत"

कानपुर में प्रयागराज के दो युवाओं को साथ ले गई रफ्तार बनी मौत, दो अस्पताल में गंभीर

सुनील बाजपेई

कानपुर। तेज रफ्तार से वाहन चलाने की आदत लोगों को असमय ही मौत के मुंह में समा जाने को मजबूर कर रही है। ऐसी ही एक घटना मेंरफ्तार बनी मौत प्रयागराज के दो युवकों को अपने साथ ले गई। जबकि दो की हालत अस्पताल में गंभीर बनी हुई है। यह घटना अकबरपुर थाना क्षेत्र के अंतर्गत कानपुर इटावा हाईवे पर कुंभी दूध फैक्टरी के पास बीती देर रात हुई। इसकी सूचना पर पहुंची पुलिस ने घायलों को अस्पताल भिजवा यातायात बहाल कराया।

घटना के बारे में प्राप्त विवरण के अनुसार कानपुर से औरैया जा रही कार अनियंत्रित होकर डिवाइडर पार कर दूसरी लेन में पहुंच गई। इसी दौरान औरैया से कानपुर की ओर आ रही कार से उसकी आमने-सामने टक्कर हो गई। पुलिस के मुताबिक टक्कर इतनी जोरदार थी कि दोनों वाहनों के परखच्चे उड़ गए। साथ ही उसमें बैठे लोग गंभीर रूप से घायल भी हो गए।

मौके पर पहुंची पुलिस ने बताया कि इस हादसे में औरैया की ओर जा रही कार में सवार श्रेष्ठ केसरवानी पुत्र रमेश चंद्र केसरवानी निवासी प्रीतम नगर, थाना धूमनगंज, प्रयागराज, गौरव पुत्र पप्पू शर्मा निवासी चौक प्रयागराज, हिमांशु केसरवानी पुत्र मुन्ना केसरवानी निवासी धूमनगंज प्रयागराज और रवि पुत्र लखन लाल शर्मा निवासी चौक प्रयागराज गंभीर रूप से घायल हो गए। जिसके बाद 108 एंबुलेंस की मदद से सभी घायलों को जिला अस्पताल भिजवाया गया, जहां डॉक्टरों ने हिमांशु केसरवानी और रवि को मृत घोषित कर दिया। थानाध्यक्ष हरमीत सिंह ने बताया कि हादसे के कारणों की जांच शुरू किए जाने के साथ ही दोनों युवकों के शवपोस्टमार्टम के लिए भेजे गए हैं।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय प्रशिक्षण महाअभियान 2026 में सक्रिय भागीदारी

भाजपा कार्यकर्ताओं में जोश भरने वाला ऐतिहासिक आयोजन हो रहा है कार्यकर्ताओं में आपसी प्रेम सौहार्द को बढ़ावा दे रहा हैं

परिवहन विशेष अनूप कुमार शर्मा

भीलवाड़ा भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश संगठन के निर्देशानुसार भीलवाड़ा जिले के बागौर मंडल में आयोजित महत्वपूर्ण बैठक में जिला उपाध्यक्ष कल्पेश चौधरी ने बागौर मंडल के उपस्थित कार्यकर्ताओं को संबोधित किया। यह बैठक पंडित दीनदयाल उपाध्याय प्रशिक्षण महाअभियान 2026 का हिस्सा थी, जो पार्टी को जमीनी स्तर पर मजबूत बनाने के उद्देश्य से चलाया जा रहा है। बैठक के बुथ पर चर्चा सत्र की अध्यक्षता वरिष्ठ भाजपा नेता राजाराम जी सेठिया ने की, जिसमें मंडल अध्यक्ष हेमेंद्र सिंह जी सहित मंडल के प्रमुख पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे।बैठक में बूथ मैनेजमेंट की रणनीतियों पर विस्तृत चर्चा हुई। कल्पेश चौधरी ने कार्यकर्ताओं को बूथ स्तर पर संगठन विस्तार, मतदाता संपर्क अभियान और डिजिटल टूल्स के उपयोग की गहन जानकारी दी। उन्होंने कहा, ₹पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के एकात्म मानववाद के सिद्धांतों पर आधारित हमारी पार्टी की रीति-नीतियां ही देश को मजबूत बना रही हैं। आगामी पंचायती राज चुनाव में भाजपा को अपार सफलता दिलाने के लिए हर बूथ पर सक्रिय रहना होगा।₹कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कल्पेश चौधरी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में पार्टी की उपलब्धियों का उल्लेख किया, जैसे ग्रामीण विकास योजनाएं, स्वच्छ भारत अभियान और आत्मनिर्भर भारत। उन्होंने जोर देकर कहा, ₹संगठन की ताकत ही हमारी जीत की कुंजी है। सभी कार्यकर्ता भाई-बहनों से अपील है - एकजुट होकर घर-घर जाकर पार्टी को मजबूत करें। पंचायती राज चुनाव में भाजपा की जीत सुनिश्चित कर जनसेवा का व्रत लें !₹यह महाअभियान प्रदेश भर में चल रहा है, जो कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित कर आगामी चुनौतियों के लिए तैयार करेगा। बागौर मंडल की यह बैठक इसका उत्कृष्ट उदाहरण है।

शहीद दिवस पर निकली भव्य पदयात्रा

परिवहन विशेष न्यूज

गोरखपुर। चौरी चौरा में सोमवार को युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार के माय भारत केंद्र गोरखपुर के तत्वावधान में शहीद दिवस के अवसर पर एक भव्य पदयात्रा का आयोजन किया गया। इस पदयात्रा में युवाओं का उत्साह और देशभक्ति का जज्बा देखने लायक रहा। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में शहीद-ए-आजम भगत सिंह के भतीजे चरणजीत सिंह उपस्थित रहे। वहीं विशिष्ट अतिथियों में मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० जयप्रकाश सैनी, जिला युवा अधिकारी सीमा पाण्डेय, गिरिजेश राम त्रिपाठी एवं प्रदीप देसवाल शामिल रहे। इस पदयात्रा का सफल आयोजन सचिन गौरी वर्मा एवं कृष्णा निगम के नेतृत्व में किया गया। कार्यक्रम में जे.बी. महाजन डिग्री कॉलेज के राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS) के स्वयंसेवकों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया और शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की।

कार्यक्रम के दौरान मुख्य अतिथि द्वारा शहीद स्मारक पर पुष्पांजलि अर्पित की गई एवं दीप प्रज्वलन कर किया गया। साथ ही शहीदों की मूर्तियों पर माल्यार्पण कर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी गई। पदयात्रा के दौरान देशभक्ति के नारों से पूरा वातावरण गूंज उठा और युवाओं ने शहीदों के आदर्शों पर चलने का संकल्प लिया। यह कार्यक्रम न केवल शहीदों को श्रद्धांजलि देने का माध्यम बना, बल्कि युवाओं को राष्ट्र सेवा के लिए प्रेरित करने वाला भी साबित हुआ। इस अवसर पर नगर पंचायत अध्यक्ष सन्नी जायसवाल, श्याम यादव, रवि नारायण त्रिपाठी, नरेंद्र कुशवाहा, डॉ. संदीप निषाद, डॉ. जितेंद्र कुमार अस्थाना, डॉ. दिनेश यादव, लालबाबू, रामायन गुप्ता, अमित गुप्ता, सोनू एवं आयुष कुमार सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

सुभाष रहेजा उर्फ कालू के निधन पर शोक व्यक्त करने पहुंचे कैबिनेट मंत्री रणबीर सिंह गंगवा व पूर्व विधायक वेद नारंग

31 मार्च को दुर्गा मंदिर बरवाला में अंतिम अरदास

हरियाणा/हिसार (राजेश सलूजा) : रोटरी क्लब के डिप्टी गवर्नर व वार्ड नंबर 9 बरवाला के पूर्व पार्षद प्रतिनिधि विक्की रहेजा के चाचा वार्ड नंबर 9 निवासी सुभाष रहेजा उर्फ कालू का 19 मार्च को निधन हो गया था। उनके निधन से क्षेत्र में शोक की लहर फैल गई है। उनके निधन पर वार्ड नंबर 9, बरवाला स्थित उनके निवास स्थान पर शोक सभा आयोजित की जा रही है। जिसमें अनेक राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक संगठनों से जुड़े लोग पहुंचकर श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं।

शोक व्यक्त करने वालों में हरियाणा सरकार के कैबिनेट मंत्री रणबीर गंगवा, पूर्व विधायक हल्का बरवाला वेद नारंग, नगर परिषद बरवाला चेयरमैन रमेश बैटरीवाला, मंडल अध्यक्ष भाजपा बरवाला मोनू संदूजा, पूर्व चेयरमैन मार्केट कमेटी रणधीर सिंह धीरू, एकता टाइम के संपादक एवं पत्रकार दैनिक हरिभूमि राजेश सलूजा, वरिष्ठ समाजसेवी रामकेश बंसल, जिला आईटी सह प्रमुख भाजपा कमल हंदूजा, मंडल मीडिया प्रभारी राजेश, पार्षद प्रतिनिधि सुरेश शर्मा, वाइस चेयरमैन मार्केट कमेटी रोशन घनघस, शिव कुमार कौशिक, धर्मेंद्र बंजारा, सेवानिवृत्त उपमंडल अभियंता मोहन लाल, पटवारी कपिल महता सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति शामिल रहे।

इसके अलावा वर्तमान एवं पूर्व पार्षदों के साथ-साथ लायंस क्लब, फ्रेंड्स क्लब, अखिल भारतीय सेवा संघ, भारत विकास परिषद, रोटरी क्लब एवं पंजाबी सभा बरवाला के सदस्यों व पदाधिकारियों ने भी गहरा शोक व्यक्त किया।

रोटरी क्लब के डिप्टी गवर्नर व पूर्व पार्षद प्रतिनिधि विक्की रहेजा ने बताया कि स्वर्गीय सुभाष रहेजा सामाजिक स्वभाव के व्यक्ति थे और क्षेत्र में उनकी पहचान एक मिलनसार एवं सहयोगी व्यक्ति के रूप में थी। उनकी अंतिम अरदास 31 मार्च को बरवाला के हिसार रोड स्थित दुर्गा मंदिर में आयोजित की जाएगी, जिसमें क्षेत्र के लोग उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे।

वैश्य महाकुंभ को सफल बनाने का आह्वान

गोरखपुर। अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन (उ.प्र.) के तत्वावधान में गोरखपुर जर्नलिस्ट्स प्रेस क्लब पर महिला पदाधिकारियों द्वारा एक महत्वपूर्ण प्रेस वार्ता आयोजित की गई। प्रेस वार्ता का उद्देश्य आगामी आज 24 मार्च 2026, मंगलवार सायं 6:00 बजे आयोजित होने वाले वैश्य महाकुंभ सम्मान समारोह एवं भजन उत्सव को भव्य एवं सफल बनाना रहा।

प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए उत्तर प्रदेश राज्य महिला आयोग की उपाध्यक्ष एवं प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष श्रीमती चारू चौधरी ने कहा कि समाज की उन्नति में महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने बताया कि कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. गिरीश सांधी (राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व सांसद, राज्यसभा) होंगे, जबकि अतिविशिष्ट अतिथि के रूप में गोपाल मोर (राष्ट्रीय महासचिव) एवं सुधीर एस. हलवासिया (प्रदेश अध्यक्ष) उपस्थित रहेंगे। इसके अलावा विराज सागर दास (अध्यक्ष, यूपी ओलंपिक एसोसिएशन एवं प्रबंध निदेशक, बीबीडी ग्रुप) तथा शैलेन्द्र अग्रहरि (प्रदेश महामंत्री) कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएंगे।

उन्होंने सभी महिलाओं से अधिक से अधिक संख्या में कार्यक्रम में शामिल होकर इसे ऐतिहासिक बनाने का आह्वान किया।

खनन विभाग अधिकारी ने मारा दो थाना क्षेत्रों में छापा, इस बड़ी कार्रवाई से 6 वाहन सीज हुए , इस बड़ी कार्रवाई को लेकर जिले भर के खनन माफिया में मचा हड़कंप

संवाददाता: शिवेंद्र यादव

बदायूं: जिले में अवैध खनन के खिलाफ बदायूं खनन विभाग अधिकारी ने बड़ी कार्रवाई की है।रविवार देर रात्रि थाना कादर चौक में एक ट्रैक्टर रैपर मशीन व दो ट्रैक्टर ट्रालियां अवैध मिट्टी खनन करते पकड़े गए है। इसी क्रम में थाना बिनावर क्षेत्र में एक जेसीबी और दो ट्रैक्टर ट्रालियों द्वारा अवैध मिट्टी खनन किया जा रहा था। बदायूं जिले के तेज तर्रार खनन विभाग अधिकारी गुलशन कुमार ने ग्रामीणों की सूचना पर मौके पर पहुंचकर सभी वाहनों को पकड़कर सीज कर दिया है। गुलशन कुमार की इस बड़ी कार्रवाई को लेकर बदायूं जिले भर में अवैध मिट्टी खनन माफियाओं में हड़कंप मच गया है। इस कार्रवाई से यह प्रतीत होता है कि जिले भर में खनन विभाग अधिकारी द्वारा बिना परमिशन के कोई भी अवैध खनन माफिया अवैध खनन करने की जरूरत नहीं करेगा।

आपको बताते चलें थाना बिनावर क्षेत्र व थाना कादर चौक क्षेत्र में आए दिन अवैध खनन हो रहा है जिससे दोनों थाना क्षेत्र अवैध खनन के मामले में अधिक चर्चित होते जा रहे है। रविवार की देर रात्रि को ग्रामीणों द्वारा बदायूं खनन विभाग अधिकारी गुलशन कुमार को सूचना दी गई की थी की थाना बिनावर क्षेत्र के उसैता गांव में मिट्टी का अवैध खनन आए दिन जोरों पर चल रहा है। ग्रामीणों की सूचना मिलने पर खनन विभाग अधिकारी गुलशन कुमार ने मय टीम के मौके पर पहुंचकर एक जेसीबी व दो ट्रैक्टरो को अवैध मिट्टी खनन करते पकड़ा गया है। इस दौरान 6 वाहनों को थाना बिनावर पुलिस और थाना कादर चौक पुलिस को सुपुर्द कर उचित कार्रवाई की गई है।

इस संबंध में बदायूं जिले के तेज तर्रार खनन विभाग अधिकारी गुलशन कुमार का कहना है कि उन्होंने ग्रामीणों की सूचना पर दो थाना क्षेत्रों में अलग-अलग स्थानो पर छापा मारा गया। जिसमें सबसे पहले छापा थाना कादर चौक क्षेत्र के गांव सकरी के जंगल में अवैध खनन होते पाया गया। जहां एक ट्रैक्टर रैपर मशीन व दो ट्रैक्टर ट्रालियां को पकड़ा गया है।

इसी क्रम में दूसरे थाना क्षेत्र में ग्रामीणों द्वारा शिकायत मिलने पर तेज तर्रार खनन विभाग अधिकारी बदायूं गुलशन कुमार ने दूसरा छापा थाना बिनावर क्षेत्र के गांव उसैता में मारा जहां से अवैध मिट्टी खनन का कारोबार करते हुए एक जेसीबी व दो ट्रैक्टर ट्रालियां को पकड़ा गया है। इस दौरान गुलशन कुमार द्वारा चार ट्रैक्टरों पर व एक जेसीबी मशीन व एक ट्रैक्टर रैपर मशीन पर उचित कार्रवाई की गई है।

शहीद-ए-दिवस के अवसर पर शहीद भगत सिंह जी, सुखदेव जी एवं राजगुरु जी को श्रद्धापूर्वक याद

नवदीप सिंह

शहीद-ए-दिवस के अवसर पर शहीद भगत सिंह जी, सुखदेव जी एवं राजगुरु जी को श्रद्धापूर्वक याद करते हुए, शहीद भगत सिंह फाउंडेशन के अध्यक्ष सोनू कुमार, उपाध्यक्ष आशु जी, कोषाध्यक्ष अमन जी, सह-कोषाध्यक्ष नितिन जी ,रोहित जी, नितेश जी एवं अन्य सदस्यों की उपस्थिति में शहीद भगत सिंह फाउंडेशन एवं मुस्कान क्लब के द्वारा नंगल राया गांव, सहयोगी पार्क के सामने एक निःशुल्क रोग जांच शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर का आरंभ बस्ती के ही वरिष्ठ नागरिकों के द्वारा हुआ। जिसमें सबसे पहले शहीद भगत सिंह जी, राजगुरु जी एवं सुखदेव जी को श्रद्धांजलि अर्पित की गई तथा उसके बाद दो मिनट का मौन रखा गया, ताकि पुण्यात्माओं को शांति की प्राप्ति हो।

शिविर के प्रारंभ से ही वरिष्ठ नागरिकों एवं महिलाओं का आना शुरू हो गया था। मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व निगम पार्षद श्रीमती राधिका हेमंत सेतिया जी, डॉक्टर के.बी. सिंह जी, करण अरोड़ा जी ,मुस्कान क्लब से अध्यक्ष रचना शर्मा जी, जयश्री जी, सुमन शर्मा जी एवं अमनप्रीत जी का विशेष सहयोग रहा तथा कई वरिष्ठ नागरिक भी उपस्थित रहे।

शिविर में विभिन्न प्रकार की बीमारियों की जांच की गई, जिसमें नेत्र जांच, रक्त जांच, मधुमेह जांच एवं फुल बॉडी चेक-अप शामिल था। साथ ही बीमारियों से बचाव के उपाय भी बताए गए।

शिविर में जांच हेतु 15 डॉक्टरों को आमंत्रित किया गया था, जिन्होंने सभी नागरिकों की समस्याओं को ध्यानपूर्वक सुना और उचित उपचार के साथ-साथ आवश्यक सलाह भी दी, जिससे नागरिकों को शीघ्र स्वास्थ्य लाभ मिल सके।

आप और हम मित्र मंडल द्वारा चैत्र नवरात्रि पर्व मनाया जा रहा है

चैत्र नवरात्रि पर उमड़ रही है भारी भीड़ , विकास खत्री

परिवहन विशेष न्यूज

आप और हम मित्र मंडल द्वारा बी एस ए कालेज स्थित आनन्दपुरी के कोलोनीवासियो ने द्वितीय नवदुर्गा महोत्सव मनाया जा रहा है चैत्र प्रतिपदा पर नवरात्रो में जगह जगह देवी को सजाया गया, प्रमोद कुमार ने बताया कि ऐसे धार्मिक आयोजनों से वातावरण शुद्ध रहता है और अमरसिंह राजपूत ने बताया कि आपसी भाईचारा बढ़ता है मां की पूजारन मीरा देवी ने बताया कि सनातन धर्म में पूजा अर्चना करने से मन को शांति मिलती है और महामाई का आशीर्वाद प्राप्त होता है पूजा करने वालों की भीड़ रही, प्रथम दिन से ही पूजा पांडालों में आस्था का सैलाब उमड़ता रहा, मंदिरों में जलाभिषेक और हवन यज्ञ का आयोजन देर शाम तक चलता रहा, लोग पूजा अर्चना करने मंदिर पहुंचे और मनौती मांगी ।

देवी मंदिरों में खासकर महिलाओं का हुजूम उमड़ा, कई जगह तो महिलाओं ने नौ दिन तक व्रत का संकल्प लिया है, वे नौ दिन तक व्रत रखकर सादगी, समर्पण का परिचय देंगी, कई महिलाएं एक लॉन्ग के जोड़ा से व्रत का पालन करेंगी, इस दौरान राम और हनुमान मंदिरों में भी विशेष पूजा-अर्चना की जा रही है, लोकप्रिय रुद्र काली देवी मंदिर में सुबह से ही भक्तों की भीड़ उमड़ पड़ी।

मीडिया प्रभारी विकास खत्री ने बताया कि इस बार चैत्र नवरात्र की शुरुआत तीन विशेष शुभ योगों शुक्ल योग, ब्रह्म योग और सर्वार्थ सिद्धि योग में हो रही है, शुक्ल योग में पूजा-पाठ, व्रत, जप और धार्मिक कार्य करने से विशेष पुण्य मिलता है, नए कार्यों की शुरुआत करने से सफलता और उन्नति मिलने की संभावना है, ब्रह्म योग में अध्ययन, मंत्र साधना, ध्यान और धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन विशेष फलदायी होता है रोज शाम को महिलाओं ने भजनों से मां को रिझाया तो किसी ने नाचकर हाजरी लगाई इस अवसर पर, प्रमोद कुमार, मीरा देवी,अमरसिंह राजपूत, शुशील गौतम, विकास खत्री,आकाश चौरसिया, दिनेश चौधरी, दिनेश कुमार, हरिवंश, लक्की, कोमल फोजी, अनूप सिंह, राधा, विमला देवी,नीरु, एवं अन्य महीलाऐ उपस्थित रहीं

डिजिटल डस्टः हमारे ऑनलाइन जीवन की अनदेखी छाया

● विजय गर्ग

डिजिटल डस्ट में हमारी सोशल मीडिया पोस्ट, लाइक्स, कमेंट्स, सर्च हिस्ट्री, ईमेल और ऑनलाइन खरीदारी की जानकारी शामिल होती है। हम अक्सर इस बात को नजरअंदाज कर देते हैं कि ये छोटे-छोटे डेटा टुकड़े मिलकर हमारे बारे में एक संपूर्ण तस्वीर बना सकते हैं। कंपनियां और वेबसाइटें इस जानकारी का उपयोग करके हमें लक्षित करती हैं और हमारे लिए विशेष विज्ञापन तैयार करती हैं।

आज के डिजिटल युग में, हम सभी एक ऐसी दुनिया में रह रहे हैं जहां हमारा हर कदम, हर क्लिक और हर पसंद एक निशान छोड़ती है। इसे अक्सर 'डिजिटल डस्ट' या 'डिजीटल फुटप्रिंट' कहा जाता है। जैसे घर में पैदा होने वाला धूल हमें अनदेखा कर देता है लेकिन धीरे-धीरे एकत्रित हो जाता है, वैसे ही इंटरनेट पर हमारी गतिविधि भी डेटा का एक विशाल भंडार बन जाती है। डिजिटल डस्ट क्या है? सरल शब्दों में, जब भी आप इंटरनेट का उपयोग करते हैं, तो आप अपने बारे में कुछ जानकारी छोड़ जाते हैं। इसमें शामिल हैंः सोशल मीडिया पोस्ट और टिप्पणियाँः जिन्हें आप पसंद करते हैं या साझा करते हैं। खोज इतिहासः जो आप गूगल या अन्य प्लेटफार्मों पर खोजते हैं। ऑनलाइन खरीदारीः आपकी पसंद और खरीदारी की आदतें। स्थान डेटाः आपका फोन कहां-कहां जाता है। यह क्यों मायने रखता है? कभी-कभी हमें लगता है कि यह केवल एक छोटी सी जानकारी है, लेकिन वास्तव में यह बहुत प्रभावशाली हैः गोपनीयताः आपका यह डेटा कंपनियों द्वारा आपके व्यवहार को समझने और आपको विज्ञापन दिखाने के लिए उपयोग किया जाता है। सुरक्षाः यदि यह डेटा गलत हाथों में चला जाता है, तो इसका उपयोग पहचान की चोरी या साइबर धोखाधड़ी के लिए किया जा सकता है। डिजिटल विरासतः भविष्य में, हमारा यह डिजिटल इतिहास ही हमारी पहचान बन सकता है। अपनी डिजिटल सफाई कैसे करें? जैसे-जैसे हम अपने घर की सफाई करते हैं, हमें अपनी डिजिटल उपस्थिति का भी ध्यान रखना चाहिएः अप्रयुक्त खाते हटाएँः उन सोशल मीडिया या ऐप्स को बंद कर दें जिनका आप अब उपयोग नहीं करते हैं। गोपनीयता सेटिंग्स जांचेंः अपने सोशल मीडिया खातों की गोपनीयता सेटिंग्स को नियमित रूप से देखें। ब्राउज़र इतिहास साफ़ करेंः समय-समय पर अपनी कुकीज़ और खोज इतिहास को साफ़ करें। सावधानी के साथ साझा करेंः कुछ भी पोस्ट करने से पहले सोचें कि क्या यह जानकारी सार्वजनिक होनी चाहिए। आज के डिजिटल युग में मनुष्य का जीवन ऑनलाइन दुनिया से घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है। हम सुबह उठने से लेकर रात को सोने तक मोबाइल, कंप्यूटर और इंटरनेट का उपयोग करते हैं।

इस ऑनलाइन गतिविधि के दौरान हम जो भी जानकारी छोड़ते हैं उसे 'डिजिटल डस्टॽ कहा जाता है। ये धूल हमारे डिजिटल पैरों के निशान हैं, जो हमारी आदतों और व्यवहार के बारे में काफी कुछ बताते हैं।

डिजिटल डस्ट में हमारी सोशल मीडिया पोस्ट, लाइक्स, कमेंट्स, सर्च हिस्ट्री, ईमेल और ऑनलाइन खरीदारी की जानकारी शामिल होती है। हम अक्सर इस बात को नजरअंदाज कर देते हैं कि ये छोटे-छोटे डेटा टुकड़े मिलकर हमारे बारे में एक संपूर्ण तस्वीर बना सकते हैं। कंपनियां और वेबसाइटें इस जानकारी का उपयोग करके हमें लक्षित करती हैं और हमारे लिए विशेष विज्ञापन तैयार करती हैं।

एक तरफ, डिजिटल डस्ट हमारे जीवन को आसान बना देता है। इससे हमें अपनी पसंद के उत्पाद, जानकारी और सेवाएं आसानी से मिल जाती हैं। लेकिन दूसरी तरफ, यह हमारे निजी जीवन के लिए खतरा भी बन सकता है। यदि हमारी जानकारी गलत हाथों में पड़ती है, तो इसका दुरुपयोग हो सकता है, जैसे धोखाधड़ी या पहचान की चोरी।

इसलिए हमें डिजिटल डस्ट के प्रति जागरूक रहने की जरूरत है। अपनी गोपनीयता सेटिंग्स को ठीक रखना, अनजान लिंक पर क्लिक न करना और मजबूत पासवर्ड का उपयोग करना कुछ महत्वपूर्ण कदम हैं। इसके अलावा, हमें समझदारी से ऑनलाइन जानकारी साझा करनी चाहिए।

अंत में, कह सकते हैं कि डिजिटल डस्ट आधुनिक जीवन का अभिन्न अंग बन गया है। इसके लाभों का आनंद लेते हुए हमें इसके खतरों से भी सावधान रहना चाहिए, ताकि हम एक सुरक्षित और संतुलित डिजिटल जीवन जी सकें।

साझा चूल्हा: संकट से समाधान की राह

(आलेख : डॉ. सिद्धार्थ रामू)

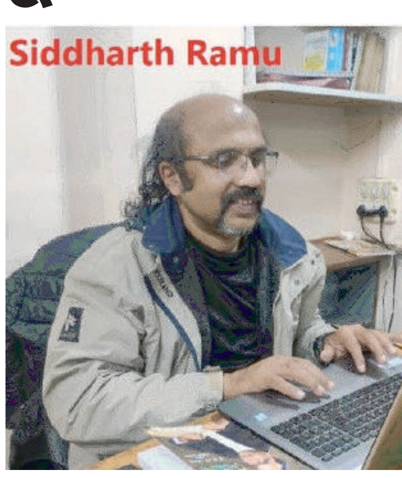

ईरान पर अमेरिका-इजरायल के हमले के बाद दुनिया का जो देश इसके खिलाफ सबसे पहले मुखर होकर सामने आया और ठोस तरीके से अमेरिका-इजरायल के खिलाफ खड़ा हुआ, वह देश स्पेन है, इसके बावजूद कि स्पेन अमेरिका के नेतृत्व वाले सैन्य गठबंधन नाटो का सदस्य है। वह उस यूरोपीय यूनियन का भी सदस्य है, जिसके अधिकांश देश खुले या थोड़ा ढंके तरीके से अमेरिका-इजरायल का समर्थन कर रहे हैं और उनका साथ दे रहे हैं। स्पेन में इस समय वामपंथ की ओर झुकी हुई स्पेनिश सोशिलिस्ट वर्कस पार्टी की सरकार है। वामपंथी पेड्रो सांचेज प्रधानमंत्री हैं।

यूरोप और पश्चिमी दुनिया में स्पेन की सरकार एकमात्र ऐसी सरकार है, जिसने साफ शब्दों में इस हमले को गैर-कानूनी (अवैध) कहा, इसे एक तरफ सैन्य कार्रवाई बताया। स्पेन के प्रधानमंत्री ने साफ कहा कि हम इस युद्ध के खिलाफ हैं और इसमें नाटो के सदस्य के रूप में शामिल नहीं होंगे। स्पेन की वर्कर्स पार्टी की सरकार ने सिर्फ बयान नहीं जारी किया, इसके साथ उसने ठोस कदम भी उठाए। स्पेन ने अपने सैन्य बेस का इस्तेमाल करने की अमेरिका को इजाजत नहीं दी। इसके बाद ट्रंप ने स्पेन के खिलाफ बहुत कुछ अनाप-शनाप बका और धमकी भी दी। इतना ही नहीं, नाटो का सदस्य होते हुए भी स्पेन ने अपने देश के भीतर अमेरिकी सैन्य गतिविधियों पर रोक लगा दी। इजरायल से अपने राजदूत को वापस बुला लिया।

स्पेन की वामपंथी सरकार के लिए अमेरिका-इजरायल के खिलाफ खड़े होना कोई आसान काम नहीं था। स्पेन एक यूरोपीय देश है, जिसका अमेरिका से घनिष्ठ आर्थिक, राजनीतिक, तकनीकी और सैन्य संबंध है। स्पेन की सरकार एक बड़ा रिस्क लेकर अमेरिका और इजरायल के खिलाफ खड़ी हुई। इसमें उसके स्पेन के मजदूर वर्ग और आमजन के बीच वर्कर्स पार्टी के जनाधार की भूमिका के साथ उनकी उस वामपंथी विचारधारा के प्रति प्रतिबद्धता भी है, जो देशों की संप्रभुता, राष्ट्रों की स्वतंत्रता और न्यायपूर्ण दुनिया में विश्वास करती है।

यूरोपीय स्पेन की ही तरह हमें श्रीलंका की वामपंथी सरकार के उन दो बड़े कदमों की भी दाद देनी चाहिए, जो उन्होंने अमेरिका-इजरायल को चुनौती देते हुए उठाए। श्रीलंका की सरकार से अमेरिका ने अनुरोध किया कि उनकी जमीन (सैन्य अड्डे) का इस्तेमाल ईरान के खिलाफ युद्ध में करने दे। श्रीलंका की सरकार ने अमेरिका की इस मांग को साफ शब्दों में खारिज कर दिया। यह सूचना श्रीलंका के वामपंथी राष्ट्रपति अनुरा कुमार दिसानायके ने श्रीलंका की संसद को दी।

श्रीलंका के राष्ट्रपति अनुरा कुमार दिसानायके ने संसद को बताया कि सरकार ने मार्च की शुरुआत में अमेरिका के दो लड़ाकू विमानों को देश के दक्षिण-पूर्व स्थित मत्ताला अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतरने की अनुमति देने से इनकार कर दिया था। दिसानायके ने कहा कि जिबूती स्थित अमेरिकी अड्डे से दो युद्धक विमानों ने चार और आठ मार्च को श्रीलंका आने की अनुमति मांगी थी, लेकिन दोनों अनुरोध अस्वीकार कर दिए गए।

इसके साथ ही श्रीलंका के तट के पास ईरान की नौसेना की जहाज पर अमेरिकी पनडुब्बी ने हमला किया। जिसमें 87 लोग मारे गए। कई लोग बुरी तरह घायल हुए। श्रीलंका ने इस पर सवार सैनिकों को बचाने, घायलों का इलाज कराने और शवों को निकालने के लिए अपनी पूरी ताकत लगा दी। 32 लोगों को बचाने में श्रीलंका की नौ सेना सफल रही। हालांकि यह कार्रवाई श्रीलंका ने अंतरराष्ट्रीय कानूनों का अनुपालन करते हुए एक मानवीय सहायता के रूप में की, लेकिन अमेरिका ने इसे भी अपने खिलाफ और ईरान के पक्ष में की गई कार्रवाई की तरह देखा।

श्रीलंका के ये कदम देखने में छोटे कदम लग सकते हैं, लेकिन इन कदमों का कितना बड़ा महत्व है और यह करके श्रीलंका ने कितना बड़ा जोखिम लिया, इसको दो बातों से समझा जा सकता है। पहला यह कि श्रीलंका एक गंभीर आर्थिक संकट से जूझ कर निकला है, अभी उसके आर्थिक संकट का पूरी तरह समाधान नहीं हुआ है। इस संकट के समाधान में अंतरराष्ट्रीय मुद्राकोष, विश्व बैंक और अमेरिका-यूरोप की बड़ी भूमिका है। इसके बावजूद भी श्रीलंका ने अमेरिका को मना करने और उसकी इच्छा के खिलाफ खड़ा होने का साहस किया। दूसरी बात यह कि जब दुनिया के अधिकांश देश और श्रीलंका के पड़ोसी भारत-पाकिस्तान अमेरिका-इजरायल के साथ खड़े दिख रहे हैं, उस हालात में श्रीलंका की वामपंथी सरकार और राष्ट्रपति का निर्णय बहुत मायने रखता है।

स्पेन का निर्णय पश्चिमी दुनिया, यूरोपियन यूनियन और नाटों का सदस्य होने के चलते बहुत मायने रखता है, तो श्रीलंका निर्णय इसलिए महत्वपूर्ण हो जाता है कि वह युद्ध क्षेत्र के दायरे का एक देश है। वह ईरान का कई मायने में पड़ोसी भी है। लैटिन अमेरिका की इस युद्ध में सीधे कोई भूमिका नहीं हैं, लेकिन वामपंथ की ओर झुके हुए ब्राजील के राष्ट्रपति और उनकी सरकार ने खुलकर अमेरिका और इजरायल की निंदा की है। ईरान पर अमेरिकी-इजरायली हमले को दादागिरी और ईरान का संप्रभुता का खुला उल्लंघन कहा है। रूस-चीन की चर्चा की इसलिए विशेष जरूरत यहां नहीं है, क्योंकि उनका अमेरिका से पहले से ही सीधी टकराहट है और भविष्य में गंभीर टकराहटों की संभावना भी है। ये दो देश हैं, जिन्होंने इस हमले की सबसे पहले निंदा की थी।

स्पेन और श्रीलंका जैसी वामपंथी सरकारों या श्रमिकों आधारों वाली ब्राजील की सरकार का अमेरिका-इजरायल के खिलाफ खड़ा होना यह बताता है कि वामपंथी वैचारिकी आज भी पार्टियों, नेताओं और व्यक्तियों को हर तरफ के अन्याय के खिलाफ खड़ा होने की दर्शन, विचार और कूबत देती है। बात सिर्फ पार्टियों की नहीं है, बल्कि दुनिया भर की वामपंथी पार्टियां और उनके नेता-कार्यकर्ता और समर्थक बुद्धिजीवी किसी भी अन्य वैचारिकी की पार्टियों की तुलना में इस युद्ध की मुखालफत में खुलकर खड़े हैं।

ये पार्टियां-ग्रुप, नेता और वामपंथी बुद्धिजीवी और उनकी पत्र-पत्रिकाएं (मीडिया) बिना किसी किंतु-परंतु के इस अमेरिका-इजरायल को बर्बर हमलावर और नरसंहार कर के रूप में देख रहे हैं। अपने-अपने देशों और विभिन्न मंचों पर इसका विरोध कर रहे हैं। यहां तक कि सड़कों पर अमेरिका-इजरायली हमले के खिलाफ उतरे हैं।

एक तरफ दुनिया में वामपंथी सरकारें, वामपंथी पार्टियां और वामपंथी कार्यकर्ता खुलकर अमेरिका-इजरायल के खिलाफ खड़े हैं, वहीं दूसरी ओर खुद को इस्लामिक राष्ट्र दर्जा देने वाले या मुसलमानों का देश कहने वाले दुनिया के देश, विशेषकर पश्चिम के ईरान के पड़ोसी पूरी तरह इस हमले में अमेरिका-इजरायल के साथ खड़े हैं। ईरान और ईरानी जनता के खिलाफ बर्बर हमले में ये देश पूरे के पूरे अमेरिका-इजरायल के सहयोगी हैं।

सऊदी अरब, कतर, ओमान, कुवैत, बेरूत आदि खाड़ी देशों के साथ और सहयोग के बिना न तो इजरायल और न ही अमेरिका ईरान का कुछ बिगाड़ सकते थे। खाड़ी देशों के इन इस्लामिक राष्ट्रों में स्थित अमेरिकी सैन्य अड्डे के बिना अमेरिका और इजरायल ईरान का कुछ खास बिगाड़ नहीं सकते थे और हैं। पाकिस्तान तो अमेरिका और ट्रंप की चापलूसी करने की सारी हदें पार कर चुका है। सच यह है कि खुद को इस्लामिक देश-राष्ट्र कहने वाले बहुलांश देश, विशेषकर ईरान के पड़ोसी देश पूरी तरह अमेरिका-इजरायल के सामने लेट गए हैं।

हिंदू राष्ट्र और हिंदुत्व हृदय सम्राट कहे जाने वाले हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारत में स्वतंत्र विदेश नीति और संप्रभुता को किनारे लगाकर इस युद्ध में इजरायल-अमेरिका के साथ खड़ा हुए। ईरान पर अमेरिका-इजरायल के हमले के 36 घंटे पहले उन्होंने इजरायल की यात्रा की, उसे फादर लैंड कहा। हर स्थिति में उसके साथ खड़ा होने का वादा किया। ईरान जैसे लंबे समय के साथी के साथ पूरी तरह विश्वासघात किया। ईरान के राष्ट्र प्रमुख खुमैनी की इजरायल-अमेरिका द्वारा गुंडे की तरह हत्या पर भारत सरकार लगातार चुप्पी साधे रही, आज तक भारत के प्रधानमंत्री या किसी मंत्री ने इसकी निंदा नहीं की।

सभी अंतरराष्ट्रीय कानूनों का उल्लंघन करके ईरान पर हमला और वहां के सर्वोच्च नेता और नेताओं और अन्य लोगों की हत्या पर भारत चुप रहा। यहां तक ईरान कि सैकड़ों मासूम बच्चियों की हत्या पर भारत ने मुंह नहीं खोला। भारत के अधिकांश पूर्व राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकारों ने एक स्वर से भारत की पोजिशन की आलोचना की है। इसे न केवल राष्ट्र की संप्रभुता, गरिमा और ऐतिहासिक विरासत के खिलाफ कहा है, बल्कि इसे राष्ट्रीय हितों के खिलाफ भी माना है।

खुद को इस्लामिक राष्ट्र कहने वाले ईरान के पड़ोसी पश्चिम एशिया के देशों या हिंदू राष्ट्र और विश्व गुरु का दंभ भरने वाली भारत सरकार का ईरान के खिलाफ बर्बर अमेरिका-इजरायल हमले में सहभागी होना या चुप्पी साधे रखना तो बातें साफ कर देता है- पहली तो यह कि इनके लिए धर्म सिर्फ अपनी सत्ता को कायम रखने और बनाए रखने का एक सिर्फ जनता को धोखा देने का आवरण है। इन सरकारों-शासकों का धर्म से कोई खास लेना-देना नहीं है।

दूसरी बात यह है कि जिस धर्म की ये कसमें खाते हैं और जिसके संरक्षक और चैंपियन होने का दावा करते हैं, उसके न्याय-न्याय के किसी तत्व से इनका कोई लेना-देना नहीं हैं। असल में ये देश अपने-अपने देशों के मुट्ठी भर उच्च मध्यवर्ग और मध्यवर्ग के एक हिस्से हितों के प्रतिनिधि हैं, उनके चाकर हैं। उनके सुख-सुविधा और विलासिता के रक्षक हैं। अपने देशों के व्यापारियों-कारोबारियों-मुनाफाखोरों के कारोबार के प्रबंधक हैं, कई तो खुद के कारोबारी-व्यापारी हैं या बड़े कारोबारियों-व्यापारियों के मित्र हैं। इन सब का हित अमेरिकी कार्पोरेट-कार्पोरेशन, शेयर बाजारों, बैंकों और इनके प्रबंधकों से जुड़ा हुआ है, जिनके हितों के मैनेजर आजकल ट्रंप हैं। हां इन शासकों के पास न्याय, गरिमा, संप्रभुता और व्यापक मानवता को केंद्र में रखने वाला कोई दर्शन, विचार, एजेंडा, स्वप्न और कार्यक्रम भी नहीं हैं।

जहां तक पश्चिमी उदारवाद या नवउदारवादी कहे जाने वाले देशों ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, इटली आदि का प्रश्न है। इनके देशों की जनता का एक बड़ा हिस्सा फिलिस्तीन की जनता के साथ खड़ा है और इजरायल और उसके सबसे बड़े सहयोगी अमेरिका के खिलाफ भी है। जनमत के इस दबाव में इन देशों की सरकारें खुलकर अमेरिका-इजरायल का साथ नहीं दे पा रही हैं। लेकिन ब्रिटेन ईरान के खिलाफ इस हमले में तमाम शाब्दिक आडंबरों के बाद भी अमेरिका-इजरायल को युद्ध में सैन्य मदद कर रहा है। फ्रांस की स्थिति भी कमोबेश यही है। जर्मनी थोड़ी ज्यादा दूरी बनाए हुए है।

इटली भी पूरी तरह अमेरिका-इजरायल के साथ खड़ा नहीं हो पा रहा है। पर इन सब बातों के बावजूद भी यह खुला तथ्य है कि ये देश इस अंतरराष्ट्रीय कानूनों का खुला उल्लंघन करके ईरान पर अमेरिका-इजरायल के हमले की निंदा तक अभी नहीं किए हैं। ईरान की संप्रभुता और आजादी के मनमाने तरीके से रौंदने की कोशिशों का इन देशों ने खुला विरोध नहीं किया है। भले ही अपने देशों के जनमत, विश्व जनमत और दुनिया को बिला वजह संकट में डाल देने वाले इस युद्ध में वे अमेरिका के हर आह्वान का साथ नहीं दे रहे हैं और यह भी कह रहे हैं कि यह युद्ध नाटों का युद्ध नहीं हैं।

इन तमाम सहमतियों-असहमतियों के बीच भी सच यह है कि पश्चिमी दुनिया के अधिकांश उदारवादी लोकतांत्रिक देश की सरकारें ट्रंप-इजरायल के सामने इस्लामिक देशों और हिंदू राष्ट्र के मसीहा की तरह भले ही लेटे हुए न हों, पर वे उनके सामने झुके हुए हैं, कोई कम झुका है और कोई ज्यादा। यही स्थिति दुनिया भर के उदारवादी-लोकतांत्रिक कहे जाने वाली पार्टियों, नेताओं और बुद्धिजीवियों के भी बड़े हिस्से की है।

भारत में यदि वामपंथी पार्टियों-नेताओं -कार्यकर्ताओं को छोड़ दिया जाए तो कोई पार्टी-नेता भारतीय जनमत को इस मुद्दे पर अमेरिका-इजरायल के खिलाफ खड़ा करने के कोई पहलकदमी करता हुआ नहीं दिखाई दे रहा है। उनकी भारत सरकार की आलोचना शब्दों तक सीमित है। हालांकि भारत में ऐसे मुद्दों पर वामपंथी पहलकदमी भी कमजोर पड़ी है।

व्यापक जन को केंद्र में रखने वाला कोई दर्शन, विचार, स्वप्न, एजेंडा, कार्यक्रम और उस पर आधारित संगठन-पार्टी-नेता ही अंत में राष्ट्रों की संप्रभुता, देशों की आजादी और जनता शोषण-उत्पीड़न से जनता की मुक्ति का पक्ष ले सकता है। एक दुनिया की रचना कर सकता है, जहां हर व्यक्ति, हर राष्ट्र और देश का समान मूल्य हो। किसी पर किसी का कोई वर्चस्व न हो।

कोई किसी के अधीन और मातहत न हो। वामपंथ के पराजय के इस दौर में बची-खुची पार्टियों, उनकी कुछ सरकारों, नेताओं और कार्यकर्ताओं का अमेरिकी-इजरायली के हमले के खिलाफ खड़ा होना यह साफ संकेत देता है कि व्यापक मेहनतकश जन को केंद्र में रखनी वाली वामपंथी वैचारिकी ही दुनिया का भविष्य है। हां यह सच है कि वह कोई सिर्फ अतीत का दुहराव नहीं होगा, बल्कि 21 वीं सदी की मानव जाति की जरूरतों को केंद्र में रखकर सामने आएगी।

(साभार : जन चौक। डॉ. सिद्धार्थ रामू लेखक और पत्रकार हैं।)

एआई के युग में छात्रों को क्या सीखना चाहिए?

डॉ विजय गर्ग

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) का तेजी से विकास शिक्षा को ऐसे तरीकों से बदल रहा है जो पहले कभी नहीं देखा गया। आज, छात्र एआई उपकरणों का उपयोग करके निबंध तैयार कर सकते हैं, जटिल समस्याओं को हल कर सकते हैं और किसी भी विषय पर कुछ ही सेकंड में स्पष्टीकरण प्राप्त कर सकते हैं। यह तकनीकी बदलाव एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठाता हैः यदि मशीनें इतना कुछ कर सकती हैं, तो छात्रों को वास्तव में क्या सीखना चाहिए?

1। सीखना कैसे सीखें एआई युग में, ज्ञान अब दुर्लभ नहीं है - यह तुरंत उपलब्ध है। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण है लगातार सीखने और अनुकूलन करने की क्षमता। छात्रों में जिज्ञासा, स्वयं सीखने की आदतें और नए कौशल शीघ्रता से प्राप्त करने की क्षमता विकसित होनी चाहिए। पारंपरिक रॉट लर्निंग अपनी प्रासंगिकता खो रही है, क्योंकि ज्ञान का शेल्फ लाइफ लगातार कम होता जा रहा है।

2। आलोचनात्मक सोच और निर्णय एआई त्वरित और स्पष्ट उत्तर दे सकता है, लेकिन यह हमेशा सटीक नहीं होता। छात्रों को सूचना पर सवाल उठाना, स्रोतों का सत्यापन करना और स्वतंत्र रूप से सोचना सीखना चाहिए। एआई पर अंधाधुंध निर्भरता सोचने की क्षमता को कमजोर कर सकती है, जिससे उत्पन्न सामग्री से भरी दुनिया में जीवित रहने के लिए आलोचनात्मक विश्लेषण एक मुख्य कौशल बन जाता है।

3। समस्या-समाधान कौशल एआई तब सबसे अच्छा काम करता है जब उसका मार्गदर्शन ऐसे मनुष्यों द्वारा किया जाता है जो समस्याओं को स्पष्ट रूप से परिभाषित कर सकते हैं। इसलिए, छात्रों को जटिल समस्याओं को छोटे, प्रबंधनीय भागों में तोड़ने में निपुणता हासिल करनी होगी। विज्ञान और इंजीनियरिंग में लंबे समय से मूल्यवान यह क्षमता AI उपकरणों का प्रभावी ढंग से उपयोग करने के लिए आवश्यक हो गई है।

4। रचनात्मकता और मौलिक सोच हालांकि एआई सामग्री उत्पन्न कर सकता है, लेकिन यह अक्सर मौजूदा पैटर्न पर निर्भर करता है। मानवीय रचनात्मकता—मूल विचार, कल्पना और नवीनता—अपरिवर्तनीय रहते हैं। छात्रों को रचनात्मक अभिव्यक्ति, डिजाइन सोच और नवाचार पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, जो मनुष्यों को मशीनों से अलग करते हैं।

5। भावनात्मक बुद्धिमत्ता और मानवीय कौशल एआई में सहानुभूति, नैतिकता और भावनात्मक समझ का अभाव है। संचार, टीमवर्क, सहानुभूति और नेतृत्व जैसे कौशल विशेष रूप से मानवीय हैं और उनका मूल्य भी बढ़ता जा रहा है। यहां तक कि एआई-संचालित कक्षाओं में भी शिक्षकों की भूमिका और मानवीय संपर्क अपूरणीय है।

6। डिजिटल और एआई साक्षरता छात्रों को सिर्फ AI— का उपयोग नहीं करना चाहिए, उन्हें इसे समझना होगा। यह सीखना कि एआई कैसे काम करता है, इसकी सीमाएं, पूर्वाग्रह और नैतिक निहितार्थ महत्वपूर्ण हैं। इससे जिम्मेदार उपयोग सुनिश्चित होता है और शक्तिशाली प्रौद्योगिकियों के दुरुपयोग को रोका जा सकता है।

7। प्रणालीगत सोच और अंतःविषय शिक्षा आधुनिक समस्याएं जटिल और आपस में जुड़ी हुई हैं। छात्रों को सिस्टम सोच की आवश्यकता होती है - प्रौद्योगिकी, पर्यावरण, अर्थव्यवस्था और समाज जैसे विभिन्न क्षेत्रों के बीच संबंध देखने की क्षमता।

8। मुख्य विषयों में मजबूत नींव तीव्र तकनीकी परिवर्तन के बावजूद, गणित, विज्ञान और तर्क जैसे विषयों में बुनियादी ज्ञान आवश्यक बना हुआ है। ये विषय विश्लेषणात्मक सोच का निर्माण करते हैं तथा एआई और भविष्य की प्रौद्योगिकियों की उन्नत समझ को समर्थन देते हैं।

निष्कर्ष एआई का युग शिक्षा के महत्व को कम नहीं करता है, बल्कि इसे बदल देता है। सूचना को याद करने के बजाय, छात्रों को सोचने, सृजन करने, प्रश्न पूछने और अनुकूलन पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। लक्ष्य अब नियमित कार्यों में मशीनों के साथ प्रतिस्पर्धा करना नहीं है, बल्कि अद्वितीय मानवीय क्षमताओं को विकसित करना है, जिन्हें एआई दोहरा नहीं सकता।

अंततः, सबसे सफल छात्र वे नहीं होंगे जो सबसे अधिक जानते हैं, बल्कि वे होंगे जो तेजी से बदलती दुनिया में सीख सकते हैं, अनसीख सकते हैं और पुनः सीख सकते हैं।

डॉ विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रधान शैक्षिक स्तंभकार प्रख्यात शिक्षाशास्त्री स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

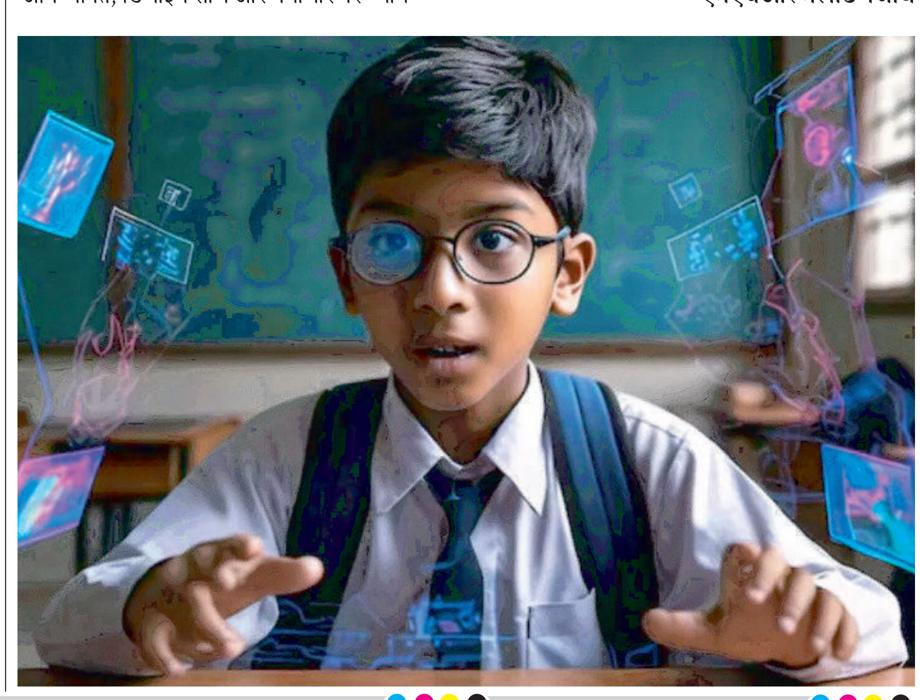

ECoR ने ट्रेन सुरक्षा सुनिश्चित करने में असाधारण सतर्कता के लिए दो रेल कर्मचारियों को सम्मानित किया

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओडिशा

भुवनेश्वरः ईस्ट कोस्ट रेलवे के महाप्रबंधक श्री परमेश्वर फंकवाल ने सुरक्षित ट्रेन संचालन सुनिश्चित करने में अपनी असाधारण सतर्कता और समर्पण के लिए दो रेल कर्मचारियों को सम्मानित किया।

पुरस्कार पाने वालों में संबलपुर मंडल के अंतर्गत लोइसिंघा के ट्रैक मेंटेनर-II श्री श्रीनिवास भोई और खुर्दा रोड मंडल के अंतर्गत पुरी के लोको पायलट (यात्री) श्री धीरेंद्र कुमार जेना शामिल हैं। इन्हें संभावित सुरक्षा खतरों को टालने में उनके समय पर किए गए कार्यों और सूझबूझ के लिए सम्मानित किया गया।

17 फरवरी 2026 को, लोइसिंघा और बलांगीर के बीच 'कीमैन' (Keyman) की ड्यूटी निभाते समय, श्री श्रीनिवास भोई ने वहां से गुजर रही एक ट्रेन के पहिये में एक गड़बड़ी देखी; पहिया घूम नहीं रहा था और उससे चिंगारियां निकल रही थीं। उन्होंने तुरंत स्टेशन अधीक्षक को इसकी सूचना दी, जिसके परिणामस्वरूप ट्रेन को तत्काल रोक दिया गया। जांच करने पर, एक 'लॉक एक्सल' (जमा हुआ धुरा) और पहिये में गंभीर खराबी पाई गई, जिससे एक संभावित बड़ी दुर्घटना टल गई।

इसी तरह, 4 मार्च 2026 को, पुरी से खुर्दा रोड तक एक MEMU ट्रेन का संचालन करते समय, श्री धीरेंद्र कुमार जेना ने मालतीपाटपुर और सखीगोपाल के बीच रेल ट्रैक में 'बकलिंग' (टेढ़ापन) देखा। अत्यधिक सतर्कता का परिचय देते हुए, उन्होंने तुरंत ट्रेन रोक दी और संबंधित अधिकारियों को सूचित किया। इसके बाद ट्रैक की मरम्मत की गई, जिससे ट्रेन सेवाओं का सुरक्षित रूप से पुनः संचालन सुनिश्चित हो सका।

उनकी त्वरित प्रतिक्रिया और पेशेवर प्रतिबद्धता ने रेल संचालन की सुरक्षा और विश्वसनीयता बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

पुरस्कार प्रदान करते समय, श्री फंकवाल ने उनके समर्पण की सराहना की और अग्रिम पंक्ति के कर्मचारियों के बीच सतर्कता के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि पूरे नेटवर्क में सुरक्षित और निर्बाध ट्रेन संचालन सुनिश्चित करने के लिए उनकी सतर्कता और समय पर की गई कार्रवाई अत्यंत महत्वपूर्ण है।

ईस्ट कोस्ट रेलवे उन कर्मचारियों को सम्मानित करके सुरक्षा और परिचालन उत्कृष्टता की एक मजबूत संस्कृति को बढ़ावा देना जारी रखे हुए है, जो अपने कर्तव्यों का निर्वहन करने में अपनी क्षमता से बढ़कर प्रयास करते हैं।

राज्य और नेशनल लेवल पर अलग-अलग स्पोर्ट्स कॉम्पिटिशन में शानदार सफलता हासिल की है, पुलिस भवन में आयोजित एक खास प्रोग्राम में सम्मानित किया गया

मनोरंजन शासमल स्टेट हेड ओडिशा

भूबनेश्वर : ओडिशा पुलिस के उन खिलाड़ियों को आज भुवनेश्वर के पुलिस भवन में आयोजित एक खास प्रोग्राम में सम्मानित किया गया, जिन्होंने राज्य और नेशनल लेवल पर अलग-अलग स्पोर्ट्स कॉम्पिटिशन में शानदार सफलता हासिल की है।

राज्य के सिक्योरिटी डायरेक्टर जनरल श्री योगेश बहादुर खुरानिया चीफ गेस्ट के तौर पर शामिल हुए और खिलाड़ियों को उनके शानदार परफॉर्मेंस के लिए कैश प्राइज के साथ सर्टिफिकेट भी दिए।

इस मौके पर, DGP श्री खुरानिया ने मेडल जीतने वालों को बधाई दी और उनके टैलेंट, डिसिप्लिन और कड़ी मेहनत की बहुत तारीफ की। उन्होंने कहा कि खिलाड़ियों की यह सफलता राज्य और ओडिशा पुलिस के लिए गर्व की बात है और उनकी सफलता ओडिशा के युवाओं को स्पोर्ट्स की ओर अट्रैक्ट करेगी।

खास बात यह है कि हाल ही में हुई ऑल-इंडिया पुलिस और सीनियर नेशनल चैंपियनशिप-2026 में, ओडिशा पुलिस के खिलाड़ियों ने कई गोल्ड, सिल्वर और ब्रॉन्ज़ मेडल जीते हैं। रितु कौड़ी और सोनालिका दास ने रोइंग में गोल्ड मेडल जीते। इसी तरह, खिलाड़ियों ने कैनोइंग, कयाकिंग, कराटे और एथलेटिक्स में भी शानदार सफलता हासिल की है।

दूसरी तरफ, कटक में हुई 74वीं स्टेट पुलिस एथलेटिक चैंपियनशिप 2025-26 में ओडिशा पुलिस के 7 एथलीटों ने 11 अलग-अलग डिसिप्लिन में नए 'मीट रिकॉर्ड' बनाकर नया कीर्तिमान स्थापित किया है। बिघनराज मिरिडिया, अशोक दंडसेना, सुष्मिता तिगा और सबिता टोप्पो जैसे खिलाड़ियों ने अपनी-अपनी कैटेगरी में शानदार प्रदर्शन करके नए रिकॉर्ड बनाए हैं।

वर्जनाओं से विमर्श तकः स्त्री की आत्मपहचान का नया अध्याय

अजय कुमार बियानी
इंजीनियर और स्वतंत्र लेखक

समाज के विकास की हर कहानी में स्त्री की उपस्थिति अनिवार्य रही है, फिर भी विडंबना यह है कि उसकी पहचान को लेकर दृष्टिकोण आज भी द्वंद्व से भरे हुए हैं। एक ओर उसे परिवार की धुरी, त्याग और ममता की प्रतिमूर्ति माना जाता है, तो दूसरी ओर उसकी स्वतंत्रता और आत्मनिर्णय को लेकर संदेह और सीमाएं खड़ी कर दी जाती हैं। प्रश्न यह नहीं कि स्त्री क्या है, बल्कि यह है कि समाज उसे क्या बनने देना चाहता है—और उससे भी अधिक महत्वपूर्ण, वह स्वयं क्या बनना चाहती है।

इतिहास साक्षी है कि स्त्री को दो परस्पर विरोधी दृष्टियों से देखा गया है। पहली दृष्टि में वह पुरुष की अधीनस्थ, उसकी इच्छाओं की पूर्ति का माध्यम और सीमित दायरे में बंधी एक भूमिका है। दूसरी दृष्टि में वह पुरुष की सहचरी, उसकी अर्धांगिनी और जीवन की समान भागीदार है। इन दोनों विचारों के बीच ही स्त्री के जीवन की अधिकांश वर्जनाएं निर्मित हुई हैं, जिन्होंने उसके व्यक्तित्व को बार-बार परिभाषित करने का प्रयास किया है।

आज का समय इन वर्जनाओं को चुनौती देने का है। आधुनिक स्त्री ने अपने लिए नए आयाम गढ़े हैं, लेकिन इस यात्रा में उसने एक नया द्वंद्व भी खड़ा कर लिया है—घरेलु और कामकाजी स्त्री का विभाजन। यह विभाजन वास्तविकता से अधिक मानसिकता का परिणाम है। कामकाजी स्त्री भी उतनी ही संवेदनशील, जिम्मेदार और परिवार-केंद्रित हो सकती है, जितनी एक गृहिणी। वहीं, गृहिणी का योगदान किसी भी बाहरी कार्य से कम नहीं, बल्कि कई बार उससे अधिक व्यापक और गहन होता है। दुर्भाग्य यह है कि घरेलुपन को धीरे-धीरे कमतर आंकने की प्रवृत्ति बढ़ी है, जिससे स्त्री के भीतर ही एक अदृश्य संघर्ष जन्म ले रहा है।

यह भी सत्य है कि स्त्री के इस बदलाव के पीछे केवल उसकी आकांक्षाएं नहीं, बल्कि वे घरेलु वर्जनाएं भी हैं, जिन्होंने उसे सीमित कर दिया था। परंपराओं के नाम पर थोपे गए नियम, निर्णयों में उसकी भागीदारी का अभाव और उसकी इच्छाओं की उपेक्षा—इन सबने उसे घर की चौखट से बाहर निकलने के लिए प्रेरित किया। यह बाहर निकलना केवल आर्थिक स्वतंत्रता का नहीं, बल्कि आत्मसम्मान और पहचान की खोज का प्रतीक है। चैत्र नवरात्र के पावन अवसर पर जब हम शक्ति की उपासना करते हैं, तब यह स्मरण रखना आवश्यक है कि जिस देवी को हम पूजते हैं, वही शक्ति हर स्त्री में विद्यमान है। देवी को हम कभी दुर्गा, कभी लक्ष्मी, तो कभी सरस्वती के रूप में देखते हैं—यानी वह एक साथ कई भूमिकाएं निभाने में सक्षम है। फिर वास्तविक जीवन में स्त्री को एक ही भूमिका में क्यों सीमित किया जाए?

धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराएं भी इस तथ्य की पुष्टि करती हैं कि स्त्री केवल अनुयायी नहीं, बल्कि नेतृत्वकारी शक्ति रही है। इतिहास में अनेक उदाहरण मिलते हैं, जहां स्त्रियों ने समाज, धर्म और संस्कृति को दिशा दी है। यह प्रमाण है कि स्त्री की क्षमता को सीमित करना उसके स्वभाव के विपरीत है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि स्त्री स्वयं अपने भीतर के इस विभाजन को समाप्त करे। वह यह समझे कि उसकी पहचान किसी एक भूमिका से नहीं, बल्कि उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व से बनती है। उसे यह स्वीकार करना होगा कि वह चाहे घर संभाले या बाहर कार्य करे, उसकी गरिमा और महत्व समान है। समाज को भी इस सोच को अपनाना होगा कि स्त्री का मूल्यांकन उसके चुनावों के आधार पर नहीं, बल्कि उसके योगदान के आधार पर किया जाना चाहिए।

सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि क्या स्त्री को वास्तव में स्वतंत्रता मिली है, या वह केवल एक नए प्रकार के दबाव में आ गई है? यदि वह केवल सामाजिक अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए घर और बाहर दोनों जगह संघर्ष कर रही है, तो यह स्वतंत्रता नहीं, बल्कि एक नई जिम्मेदारी का बोझ है। इसलिए जरूरी है कि स्वतंत्रता का अर्थ केवल अवसर नहीं, बल्कि संतुलन और सम्मान भी हो।

अंततः, स्त्री विमर्श का उद्देश्य किसी एक पक्ष को श्रेष्ठ सिद्ध करना नहीं, बल्कि संतुलन स्थापित करना है। यह समझना होगा कि स्त्री न तो केवल त्याग की मूर्ति है और न ही केवल महत्वाकांक्षा का प्रतीक। वह इन दोनों के बीच एक संतुलित, संवेदनशील और सशक्त व्यक्तित्व है।

जब समाज स्त्री को उसकी सम्पूर्णता में स्वीकार करेगा, तभी वास्तविक प्रगति संभव होगी। अन्यथा, वर्जनाओं के नाम पर खड़ी की गई दीवारें उसे आगे बढ़ने से रोकती रहेंगी। समय की मांग है कि इन दीवारों को गिराया जाए और स्त्री को वह स्थान दिया जाए, जिसकी वह सदियों से हकदार रही।

डिजिटल युग में ठगी के बढ़ते जाल से कैसे मिलेगी निजात

सौरभ वार्ष्णेय

देश की राजधानी दिल्ली आज सिर्फ राजनीतिक और प्रशासनिक केंद्र ही नहीं बल्कि साइबर और वित्तीय अपराधों का भी बड़ा केंद्र दिखाई दे रही है। प्रतिदिन औसतन 50 लाख रुपये की ठगी के मामलों का सामने आना न केवल चौंकाने वाला है बल्कि यह कानून-व्यवस्था और डिजिटल सुरक्षा पर गंभीर सवाल खड़े करता है। यह आंकड़े एक दैनिक अखबार में प्रकाशित किये गए हैं जो चौंकाने वाले दिख रहे हैं। वर्ष 2025 में 184 मामले दर्ज किये गए हैं, लगभग 70,64,80,424 रूपये (30 जून तक) तक ठग लिए गये हैं। इससे पिछले वर्ष 2024 में 1,591 मामले दर्ज हुए और 8,17,64,85,471 रूपये ठग लिए गए। आज ठगी से कैसे बचे? अभी गैस की क्या कमी हुई, ठगों ने इस आपदा को अवसर बना लिया। इस डिजिटल युग में ठगी के बढ़ते जाल से कैसे निजात मिलेगी? विशेषज्ञों का कहना है कि जागरुकता और सतर्कता सावधानी जरूरी है।

दिल्ली जैसी राजधानी में दिल्ली पुलिस अच्छा कार्य कर रही है। पिछले कुछ वर्षों में तकनीक के विस्तार के साथ ठगी के तरीके भी बेहद परिष्कृत हो गए हैं। पहले जहां जेबकतरी और साधारण धोखाधड़ी आम थी, वहीं अब ऑनलाइन फ्रॉड, फर्जी कॉल, अपडेट के नाम पर ठगी और निवेश के झांसे जैसे अपराध तेजी से बढ़े हैं। आम नागरिक, विशेषकर बुजुर्ग और डिजिटल रूप से कम जागरूक लोग, इन ठगों का आसान शिकार बन रहे हैं। दिल्ली पुलिस और अन्य एजेंसियां लगातार जागरूकता अभियान चला रही हैं लेकिन अपराधियों की चतुराई और तकनीकी दक्षता कई बार इन प्रयासों पर भारी पड़ती है। अपराधी अक्सर विदेशी सर्वर, फर्जी सिम कार्ड और डिजिटल वॉलेट्स का इस्तेमाल कर अपनी पहचान छिपा लेते हैं जिससे जांच और गिरफ्तारी में कठिनाई आती है।

यह स्थिति कई स्तरों पर चिंता पैदा करती है। पहला, आम जनता का डिजिटल लेनदेन पर विश्वास कमजोर होता जा रहा है। दूसरा, देश की आर्थिक सुरक्षा पर इसका असर पड़ता है। तीसरा, कानून प्रवर्तन एजेंसियों की क्षमता और संसाधनों पर भी प्रश्न उठते हैं।

समाधान के लिए बहुस्तरीय रणनीति आवश्यक है। सबसे पहले, साइबर अपराध से निपटने के लिए पुलिस बल को अत्याधुनिक तकनीक और प्रशिक्षण से लैस करना होगा। दूसरे, बैंकों और डिजिटल पेमेंट कंपनियों को अपनी सुरक्षा प्रणाली को और मजबूत बनाना होगा। तीसरे, स्कूलों और सामाजिक मंचों के माध्यम से डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देना चाहिए ताकि लोग ठगी के नए-नए तरीकों से परिचित हो सकें।

इसके अलावा, सरकार को सख्त कानून और त्वरित न्याय व्यवस्था सुनिश्चित करनी होगी, ताकि अपराधियों में डर पैदा हो। साथ ही, आम नागरिकों को भी सतर्क रहना होगा—अनजान कॉल, लिंक या ऑफर पर भरोसा करने से पहले पूरी जांच करना जरूरी है।

हाल के महीनों में दिल्ली पुलिस ने साइबर अपराधियों के खिलाफ आक्रामक रुख अपनाया। पुलिस आयुक्त के निर्देश पर संयुक्त आयुक्त रजनीश गुप्ता के नेतृत्व में ऑपरेशन साई-हॉक के तहत दिल्ली और पड़ोसी राज्यों में बड़े पैमाने पर छापेमारी की गई। इस ऑपरेशन का उद्देश्य उन कॉल सेंटरों और गिरोहों को नेस्तनाबूद करना था जो फर्जी केवाईसी, लॉटरी और निवेश के नाम पर लोगों को लूटते हैं। इस कार्रवाई के बाद साइबर अपराधों की दर में गिरावट दर्ज की गई। अब जांच टीम के विस्तार से इस पकड़ को और मजबूत किया जा सकेगा।

यह समझना होगा कि डिजिटल युग में सुरक्षा केवल सरकार या पुलिस की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि हर नागरिक की सामूहिक जिम्मेदारी है। यदि समय रहते ठोस कदम नहीं उठाए गए तो यह ठगी का जाल और भी व्यापक रूप ले सकता है जिससे न केवल आर्थिक बल्कि सामाजिक विश्वास भी प्रभावित होगा। यह आंकडे तो दिल्ली के है. देश भर में यह ठगी का आंकडा बड़ा भी हो सकता है लेकिन सतर्कता सावधानी जरूरी है।

डिजिटल ठगी से कैसे निजात पाएं

डिजिटल युग ने जहां हमारी जिंदगी को आसान बनाया है, वहीं ठगों के लिए नए रास्ते भी खोल दिए हैं। आज मोबाइल, इंटरनेट और ऑनलाइन बैंकिंग के बढ़ते उपयोग के साथ डिजिटल ठगी के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं। हर दिन आम लोग अपनी मेहनत की कमाई साइबर अपराधियों के जाल में फंसा रहे हैं। ऐसे में यह सवाल बेहद महत्वपूर्ण हो जाता है कि डिजिटल ठगी से कैसे बचा जाए और इस समस्या पर प्रभावी नियंत्रण कैसे हो। सबसे पहले यह समझना जरूरी है कि डिजिटल ठगी केवल तकनीकी समस्या नहीं, बल्कि जागरूकता की कमी का परिणाम भी है। ठग अक्सर फर्जी कॉल, मैसेज, ईमेल या लिंक के माध्यम से लोगों को भ्रमित करते हैं। आपका बैंक खाता बंद हो जाएगा, केवाईसी अपडेट करें, लॉटरी लगी है—जैसे लालच और डर पैदा करने वाले संदेश लोगों को जल्दी फैसले लेने पर मजबूर कर देते हैं। इसी जल्दबाजी का फायदा अपराधी उठाते हैं। इस समस्या से निजात पाने का पहला और सबसे प्रभावी उपाय है—जागरूकता। आम नागरिकों को यह समझना होगा कि कोई भी बैंक या सरकारी संस्था कभी भी फोन या मैसेज के जरिए पासवर्ड या नहीं मांगती। ऐसे किसी भी अनुरोध को तुरंत नजरअंदाज करना चाहिए।

विश्व क्षय रोग दिवस- 24 मार्च
जागरूकता ही बचाव का सबसे बड़ा उपाय

डा रूप कुमार बनर्जी
वरिष्ठ होम्योपैथिक चिकित्सक

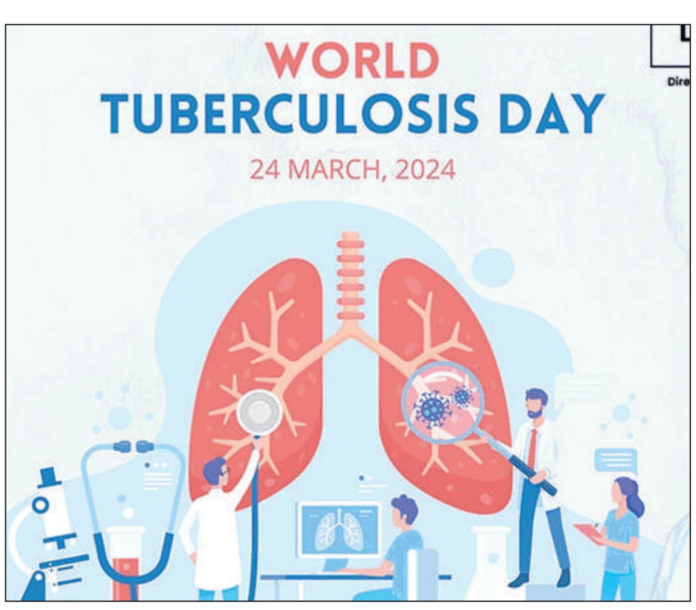

हर वर्ष 24 मार्च को पूरा विश्व Tuberculosis (टीबी) के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए एकजुट होता है। यह दिन हमें याद दिलाता है कि टीबी आज भी एक गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या है, लेकिन सही जानकारी, सावधानी और उपचार से इसे पूरी तरह हराया जा सकता है।

टीबी एक संक्रामक रोग है, जो मुख्यतः फेफड़ों को प्रभावित करता है। यह रोग Mycobacterium tuberculosis नामक जीवाणु से होता है और संक्रमित व्यक्ति के खांसने-छींकने से फैलता है।

इसके पहचान के संकेत निम्नलिखित हैं:-

लगातार 2 सप्ताह से अधिक खांसी, बलगम में खून, शाम को बुखार, रात में पसीना, बहुत ज्यादा थकान महसूस होना, वजन घटना व भूख कम होना आदि। ऐसे लक्षण दिखने पर तुरंत जांच कराना आवश्यक है।

बचाव के लिए खुद को क्या करना चाहिए :-

खांसते-छींकते समय मुंह ढकें, भीड़भाड़ व बंद स्थानों से बचें, घर में साफ हवा और धूप का प्रवेश रखें, टीबी मरीज से उचित दूरी व सावधानी रखें, फेस मास्क का प्रयोग करें, बार-बार साबुन पानी से हाथ को धोते रहे

संतुलित आहार – मजबूत रक्षा कवच :-

दाल, दूध, अंडा, पनीर (प्रोटीन), टोफू, बिल्कुल हल्का मसाले का चिकन अथवा मछली यदि मांसाहारी है तो, हरी सब्जियां और मौसमी फल, सूखे मेवे – बादाम, अखरोट, हल्दी वाला दूध। तम्बाकू, शराब, जंक फूड, फास्ट फूड आदि से दूरी बनाए रखना ही उचित है।

कैसे बढ़ाएं प्रतिरोधक क्षमता :-

नियमित योग व प्राणायाम, 7–8 घंटे की पर्याप्त नींद, तनाव से दूरी, सप्ताह में काम से कम 5 दिन हल्की एक्सरसाइज, थोड़ी देर के लिए सूर्य की रोशनी (Vitamin D)। यदि टीबी का समय पर इलाज न हो, तो यह कई अन्य रोगों को जन्म दे सकती है: Pneumonia, Bronchitis, Malnutrition, Diabetes Mellitus, HIV/AIDS आदि। इसलिए टीबी को नजरअंदाज करना खतरनाक हो सकता है।

टीबी की चिकित्सा में होम्योपैथी की महत्वपूर्ण भूमिका :-

आज के समय में टीबी केवल एक संक्रमण नहीं, बल्कि कमजोर होती प्रतिरोधक क्षमता का संकेत भी है। यदि हम रोगी के सम्पूर्ण स्वास्थ्य (Body + Mind) को देखें, तो यहां होम्योपैथी एक विशेष और प्रभावी चिकित्सा के रूप में उभरती है। होम्योपैथी केवल बीमारी नहीं, बल्कि व्यक्ति का इलाज करती है। इसका मुख्य उद्देश्य है, शरीर की आंतरिक रोग-प्रतिरोधक शक्ति को जागृत करना, रोग के मूल कारण को संतुलित करना, दवाओं के दुष्प्रभाव को कम करना और रोगी के मानसिक और शारीरिक संतुलन को सुधारना। यही कारण है कि टीबी जैसे दीर्घकालिक रोगों में होम्योपैथी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है।

जीवनशैली में सुधार :-

स्वस्थ जीवनशैली ही टीबी से बचाव का मूल मंत्र है :- स्वच्छता, संतुलित आहार, नियमित दिनचर्या, सकारात्मक सोच। टीबी एक गंभीर लेकिन पूरी तरह से उपचार योग्य रोग है।

जरूरत है जागरूकता, सही समय पर जांच और पूर्ण उपचार की। इसलिए "डर नहीं, जागरूकता अपनाएं टीबी को हराएं।"

डॉ. सत्यवान सौरभ के पच्चास चर्चित दोहे

डॉ. सत्यवान सौरभ के पच्चास चर्चित दोहे

आज तुम्हारे ढोल से, गूँज रहा आकाश।
बदलेगी सरकार कल, होगा पर्दाफाश॥

छुपकर बैठे भेड़िये, लगा रहे हैं दाँव।
बच पाए कैसे सखी, अब भेड़ों का गाँव॥

नफरत के इस दौर में, कैसे पनपे प्यार।
ज्ञानी-पंडित-मौलवी, करते जब तकरार॥

नई सदी ने खो दिए, जीवन के विन्यास।
सांस-सांस में त्रास है, घायल है विश्वास॥

जिनकी पहली सोच ही, लूट, नफ़ा श्रीमान।
पाओगे क्या सोचिये, चुनकर उसे प्रधान॥

कर्ज गरीबों का घटा, कहे भले सरकार।
सौरभ के खाते रही, बाक़ी वही उधार॥

लोकतंत्र अब रो रहा, देख बुरे हालात।
संसद में चलने लगे, थप्पड़-घूसे, लात॥

मूक हुई किलकारियाँ, गुम बच्चों की रेल।
गूगल में अब खो गये, बचपन के सब खेल॥

स्याही, कलम, दवात से, सजने थे जो हाथ।
कूड़ा-करकट बीनते, नाप रहे फुटपाथ॥

चीरहरण को देखकर, दरबारी सब मौन।
प्रश्न करे अँधराज पर, विदुर बने वह कौन॥

सूनी बगिया देखकर, तितली है खामोश।
जुगनू की बारात से, गायब है अब जोश॥

अंधे साक्षी हैं बनें, गूंगे करें बयान।
बहरे थामें न्याय की, 'सौरभ' आज कमान॥

अपने प्यारे गाँव से, बस है यही सवाल।
बूढा पीपल है कहाँ, गई कहाँ चौपाल॥

गलियाँ सभी उदास हैं, पनघट हैं सब मौन।
शहर गए उस गाँव को, वापस लाये कौन॥

पद-पैसे की आड़ में, बिकने लगा विधान।
राजनीति में घुस गए, अपराधी-शैतान॥

नई सदी में आ रहा, ये कैसा बदलाव।
संगी-साथी दे रहे, दिल को गहरे घाव॥

जर्जर कश्ती हो गई, अंधे खेवनहार।
खतरे में 'सौरभ' दिखे, जाना सागर पार॥

हत्या-चोरी लूट से, कांपे रोज़ समाज।
रक्त रंगे अख़बार हम, देख रहे हैं आज॥

योगी भोगी हो गए, संत चले बाजार।
अबलाएँ मठ लोक से, रह-रह करे पुकार॥

दफ्तर, थाने, कोर्ट सब, देते उनका साथ।
नियम-कायदे भूलकर, गर्म करे जो हाथ॥

मंच हुए साहित्य के, गठजोड़ी सरकार।
सभी बाँटकर ले रहे, पुरस्कार हर बार॥

कौन पूछता योग्यता, तिकड़म है आधार।
कौवे मोती चुन रहे, हंस हुये बेकार॥

कदम-कदम पर हैं खड़े, लपलप करे सियार।
जाये तो जाये कहाँ, हर बेटी लाचार॥

बची कहाँ है आजकल, लाज-धर्म की डोर।
पल-पल लुटती बेटियाँ, कैसा कलयुग घोर॥

राम राज के नाम पर, कैसे हुए सुधार।
घर-घर दु:शासन खड़े, रावण है हर द्वार॥

वक्त बदलता दे रहा, कैसे-कैसे घाव।
माली बाग़ उजाड़ते, मांझी खोये नाव॥

घर-घर में रावण हुए, चौराहे पर कंस।
बहू-बेटियाँ झेलती, नित शैतानी दंश॥

वही खड़ी है द्रौपदी और बढ़ी है पीर।
दरबारी सब मूक है, कौन बचाये चीर॥

गूंगे थे, अंधे बने, सुनती नहीं पुकार।
धृतराष्ट्रों के सामने, गई व्यवस्था हार॥

अभिजातों के हो जहाँ, लिखे सभी अध्याय।
बोलो सौरभ है कहाँ, वह सामाजिक न्याय॥

पीड़ित पीड़ा में रहे, अपराधी हो माफ़।
घिसती टाँगे न्याय बिन, कहाँ मिले इन्साफ॥

न्यायालय में पग घिसे, खिसके तिथियाँ वार।
केस न्याय का यूं चले, ज्यों लकवे की मार॥

फीके-फीके हो गए, जंगल के सब खेल।
हरियाली को रौंदती, गुजरी जब से रेल॥

बदले आज मुहावरे, बदल गए सब खेल।
सांप-नेवले कर रहे, आपस में अब मेल॥

झूठों के दरबार में, सच बैठा है मौन।
घेरे घोर उदासियाँ, सुनता उसकी कौन॥

चूस रहे मजलूम को, मिलकर पुलिस-वकील।
हाकिम भी सुनते नहीं, सच की सही अपील॥

फ्रेंड लिस्ट में हैं जुड़े, सबके दोस्त हज़ार।
मगर पड़ोसी से नहीं, पहले जैसा प्यार॥

सौरभ ख़ूब अजीब है, रिश्तों का संसार।
अपने ही लटका रहें, गर्दन पर तलवार॥

कोल्हान रक्षा संघ ने सारंडा के बिहड़ में पहुंचकर विकास की कलाई खोल दी

इलाका पांचवीं अनुसूची में पर राजस्व गांव को नहीं मिलता यहां वन पट्टा !

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची, कोल्हान रक्षा संघ ने पश्चिमी सिंहभूम के सारंडा के बिहड़ जंगल स्थित नोवामुड़ी प्रखंड के पोखरिया गांव में आदिवासियों के मूलभूत समस्याओं को लेकर एक बैठक को आयोजन किया, जिसकी अध्यक्षता संघ के अध्यक्ष डिबार जोंकों ने की ।जहां हजारों की तादाद में लोग अपने मुंडा, माणकी, सेक्रेटरी के साथ पहुंचे थे ।और यहां समस्याओं का अंबार लगा दी ।

अधिकारी अपने ए सी कमरे में बैठकर क्या कुछ करते हैं उसका हकीकत आज पोखरिया में लोगों ने सबके समक्ष रखा। बैठक में पहुंचे हजारों की संख्या में लोगों ने कहा इस क्षेत्र में सरकारी कर्मचारी या अधिकारियों का नहीं पहुंचना और नजर अंदाज करना मूल समस्या है ।साथ ही लोगों के राजस्व गांव होते हुए वन पट्टा आज तक नहीं दिये जाने की मुद्दे को प्रमुखता से उभारा तथा रोष प्रकट किया । अगर इलाका आज भी पांचवी अनुसूची में दर्ज है तो लोगों का बन पट्टा नहीं मिलना उन्हें उनकी मूल भूत आवश्यकता से वंचित करता है ।जहां संविधान की धज्जियां उड़ रही है ।

यहां हजारों की संख्या में पुरूष, महिलाएं एवं बच्चों ने पोषाहार केंद्र में पोषाहार का नहीं मिलने की जानकारी दी जो उनके वदन पर साफ परिलक्षित हो रहा था- कुपोषण ।देश के लिए पश्चिमी सिंहभूम जिला आदिवासी समाज के लिए बहुत कुछ कहता है । जो जंगल के बिहड़ में रह कर मुख्य धारा में शामिल होने हेतु शदियों से संघर्ष करते आ रहे हैं और उन्हें अपने अधिकारों से वंचित रखा जाता है ।

इसके साथ आज का मैया सम्मान योजना आदि में भयंकर खामियां यही देखी गयी । यहां उपस्थित 300 करीब महिलाओं मे से केवल एक महिला ही ऐसी सौभाग्य वाली मिली जिसे मैया सम्मान योजना का लाभ मिला था । सच तो यह है कि इसी सारंडा से एक जनप्रतिनिधि की गूंज सात साल पहले लोकसभा में कुपोषणग्रस्त आदिवासी समाज को लेकर जब हुई थी तब देश व युनिसेफ भी उसे सुन स्तब्ध रह गया था ।परन्तु इस दिशा में कितना काम हुआ और लोगों को लाभ मिला आज का यह बैठक बहुत कुछ कहता है ।जिसे देखने व समझने की दरकार है कोल्हान रक्षा संघ की आंख व दिमाग से ।

जब औसत आयु के बारे में जानकारी ली गई तब वहां पहुंचे हजारों की तादाद में से केवल 48 वर्ष के महज 12 ही लोग जीवन के अंतिम पायदान पर थे।जिसका मुख्य कारण कुपोषण ही रहा है। उनके ऊपर के आयु वर्ग को लोग थे ही नहीं।लोगों ने वृद्धावस्था पेंशन योजना के विषय में जो जानकारी दी वह और गंभीर बताया गया ।लोगों ने कहा वृद्धावस्था पेंशन कई महिनों से बंद प्रायः है।जहां रोजी रोजगार के संबंध में पत्ता , दातुन, थोड़ी सी लकड़ी बेचकर जीवन निर्वाह मूल आधार बताया ।उसमें भी जब कभी वन विभाग का नजर पड़ जाता है तब स्थिति जेल जाने की नौवत आ जाती ।यह समस्या के सी हेम्बरम के समय से आज तक यथावत है । जहां तक पढ़ाई की बात है पोखरिया गांव में एक विद्यालय है यहां एक पारा टीचर से स्कूल चलता है ।यह स्थिति हास्यास्पद स्थिति का बयां करता है शिक्षा को लेकर।

इस बैठक में अध्यक्ष डिबार जंको, मानसिंह हेंब्रम , रविंद्र मंडल, जयसिंह हेम्ब्रम, पूनम मेम्बरम,शिवानंद किस्कू,सुमित्रा जोंकों, मंगल सिंह लागुरी,राउतु गागराई समेत अनेक गणमान्य लोग सारंडा में पहुंच कर बैठक में शिरकत की।

चाईबासा में राइफल सफाई के दौरान चली गोली कांस्टेबल की मौत

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची, झारखंड के पश्चिम सिंहभूम जिले में नक्सलियों के खिलाफ भीड़ने वाले एक पुलिस कांस्टेबल की तब मौत हो गई, जब कथित तौर पर सर्विस राइफल की सफाई करने के दौरान गोली चल गई। पुलिस ने सोमवार को इसकी जानकारी देते हुए बताया- मृतक की पहचान गुमला जिले के रायडीह निवासी अजय किशोर खाखा (42) के रूप में हुई है। वह पलिसाई स्थित केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) शिविर में तैनात थे।एक अधिकारी ने बताया- रविवार शाम वह (अजय) अपनी राइफल साफ कर रहे थे कि तभी अचानक गोली चल गई। शव को पोस्टमॉर्टम के लिए चाईबासा सदर अस्पताल ले जाया गया। पुलिस अधीक्षक अमित रेनू ने कहा, "यह अचानक गोली चलने या किसी अन्य कारण से हो सकता है; हम मामले की हर पहलू से जांच कर रहे हैं।"

जानकारी के मुताबिक, घायल अजय किशोर खाका को उनके साथियों ने तुरंत संभाला और बचाने में जुट गए। उन्हें प्राथमिक मदद देने की कोशिश की, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी।इस घटना के बाद पूरे कैंप में शोक का माहौल फैला हुआ है। साथी जवानों ने बताया कि अजय किशोर खाका बहुत अनुशासित और कर्तव्यनिष्ठ जवान थे। उनके अचानक निधन से न केवल उनके साथियों बल्कि पूरे पुलिस विभाग में गहरा दुख व्याप्त है।

जीडिमेटला स्थित श्री आई माताजी बडेर भवन में स्व. श्रीमान खरताराम चोयल की श्रद्धांजलि सभा मे पुष्प अर्पित करते हुए जोराराम, चेनाराम, वेनाराम ,रुघाराम, कालुराम , उम्मेदराम , उत्तम,सुरेश, दिलीप, हितेश, धावल, वेदांश चोयल। सीरवी समाज के गणमान्य मांगीलाल काग, रावतराम , सोहनलाल परिहार,प्रेम पंवार, संतोष चोयल, मोहनलाल हाम्बड़, नारायणलाल काग, परसराम ,चोलाराम हाम्बड़, जसवंत देवड़ा,मोहन , उदाराम, व समाज बन्धु।

गीतांजलि काव्य प्रसार मंच का स्थापना दिवस उत्साहपूर्वक संपन्न

'नीरज कुंज' के सशक्त नारी विशेषांक का हुआ लोकार्पण

डॉ. शंभु पंवार

नई दिल्ली, 23 मार्च। गीतांजलि काव्य प्रसार मंच, दिल्ली का स्थापना दिवस अत्यंत हर्षोल्लास एवं गरिमामय वातावरण में मनाया गया। इस अवसर पर मंच की त्रैमासिक ई-पत्रिका 'नीरज कुंज' के "सशक्त नारी विशेषांक" का भव्य लोकार्पण किया गया, जिसने कार्यक्रम को विशेष साहित्यिक ऊंचाई प्रदान की।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए मंच की राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. गीतांजलि नीरज अरोड़ा 'गीत' ने साहित्य जगत में नारी शक्ति के योगदान को रेखांकित करते हुए कहा कि यह विशेषांक समाज में महिला सशक्तिकरण की प्रेरणा बनेगा। उन्होंने मंच की नई कार्यकारिणी की घोषणा करते हुए सभी पदाधिकारियों से साहित्य सेवा को और अधिक विस्तार देने का आह्वान किया। नवनिर्वाचित कार्यकारिणी में संरक्षक मंडल में साहित्य जगत की विशिष्ट विभूतियों में डॉ. अशोक मैत्रेय, डॉ. सौरभ पांडेय, डॉ. सविता चड्ढा, डॉ. वीणा मित्तल, डॉ. प्रेम भारद्वाज 'ज्ञानभिक्षु', राम किशोर उपाध्याय, डॉ. पुष्पा जोशी, डॉ. सूक्ष्मलता महाजन, देवेंद्र प्रकाश शर्मा 'देव' तथा मृत्युंजय कुमार श्रीवास्तव को स्थान दिया गया है ।एवं

प्रमुख सलाहकार के रूप में वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर डॉ. शंभू पंवार को दायित्व सौंपा गया है। मुख्य कार्यकारिणी में डॉ. गीतांजलि नीरज अरोड़ा 'गीत' (राष्ट्रीय अध्यक्ष), डॉ. मनोज कामदेव (वरिष्ठ उपाध्यक्ष), जयवीर सिंह अत्री (उपाध्यक्ष), डॉ. पुष्पा जोशी (महासचिव), सरिता विजय शर्मा (सचिव) एवं जतिन अरोड़ा (कोषाध्यक्ष) शामिल हैं। इसके साथ ही मंच की

त्रैमासिकई-पत्रिका 'नीरज कुंज' के संपादक मंडल की भी घोषणा की गई, जिसमें संरक्षक के रूप में प्रेम भारद्वाज 'ज्ञानभिक्षु', सलाहकार के रूप में डॉ. शंभू पंवार, मुख्य संपादक डॉ. गीतांजलि नीरज अरोड़ा 'गीत', संपादक डॉ. पुष्पा जोशी, सचिव श्री देवेंद्र प्रकाश शर्मा एवं उप संपादक सरिता विजय शर्मा को दायित्व प्रदान किया गया। कार्यक्रम के अंत में सभी साहित्यकारों एवं अतिथियों ने मंच की इस नई कार्यकारिणी को शुभकामनाएं देते हुए साहित्यिक गतिविधियों के व्यापक विस्तार की आशा व्यक्त की।

मिशन हेल्प फाउंडेशन (रजिस्टर्ड पंजाब) की ओर से शहीद भगत सिंह जी की शहादत को समर्पित एक विशाल एवं सेवामुखी आठवां रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। यह शिविर समाज सेवक युवराज वडाली, चेयरमैन पवन सभरवाल और वाइस चेयरमैन तजिंदर सिंह बावा द्वारा आयोजित किया गया।

अमृतसर, 23 मार्च (साहिल बेरी)

यह शिविर गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी, जीटी रोड के सामने यू.टी. मार्केट में लगाया गया, जिसमें बड़ी संख्या में युवाओं और समाज सेवियों ने भाग लेकर मानव सेवा का संदेश दिया। रक्तदाताओं में विशेष उत्साह देखने को मिला और कई यूनिट रक्त एकत्रित किया गया, जो जरूरतमंद मरीजों के लिए जीवनदान साबित होगा। इस अवसर पर शहर के मेयर जतिंदर सिंह भाटिया और पूर्व कैबिनेट मंत्री डॉ. राज कुमार वेरका मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। उन्होंने रक्तदान करने वाले युवाओं का हौसला बढ़ाते हुए कहा कि रक्तदान सबसे बड़ी मानव सेवा है और ऐसे शिविर समाज में सहयोग और भाईचारे की भावना को मजबूत करते हैं। उन्होंने कहा कि शहीद भगत सिंह जी की सोच और बलिदान से प्रेरित होकर युवाओं को समाज सेवा के कार्यों में आगे आना चाहिए। इस तरह के प्रयास न केवल जान बचाते हैं, बल्कि समाज में सकारात्मक बदलाव भी लाते हैं। शिविर के अंत में रक्तदाताओं को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया और फाउंडेशन द्वारा भविष्य में भी ऐसे सामाजिक कार्य जारी रखने का संकल्प लिया गया।

गौर राजपूतो ठाकुरो की आस्था का केन्द्र है रहडिया का कालसेन महाराज मंदिर 25 मार्च से 27 मार्च तक लगेगा मेला

संवाददाता: शिवेंद्र यादव

बदायूं: बिसौली तहसील क्षेत्र के गांव रहडिया में प्राचीन ऐतिहासिक बाबा कालसेन महाराज का मेला 25 मार्च से 27 मार्च तक लगेगा , मेला कमेटी ने बताया कि मेले की सभी तैयारिया पूर्ण कर ली गयी है मेला मे सुरक्षा की दृष्टि से वजीरगंज पुलिस रहेगी ।

वाबा कालसेन महाराज का प्राचीन मंदिर गौर राजपूत (ठाकुरो) की आस्था का केन्द्र है मेले का आयोजन सर्व प्रथम राजपूत कन्या का मुंडन संस्कार से हुआ था आज भी गौर राजपूत अपने बच्चो का प्रथम मुंडन कराते है इस वार 25 मार्च तथा 27 मार्च को बच्चो के मुंडन का शुभ महुर्त है।

रहडिया मे बाबा कालसेन महाराज का मंदिर लगभग साढ़े चार हजार वर्ष पूर्व रणथंबोर राजस्थान की महारानी विचरण करते हुए यहा आ पहुंची जहा महारानी के रथ के पहिए की धुरी टूट गई जिस कारण महारानी को रुकना पडा वाद मे महारानी ने जाने से मना कर दिया गौर वंश की महारानी के साथ उनके राजगुरु वाबा कालसेन भी थे राजगुरु से अनुमति लेकर महारानी ने रहडिया को अपना स्थायी निवास बना लिया जो महारानी का किला आज खंडहर हो चुका है महारानी ने अपने राजगुरू बाबा की मृत्यु होने के वाद कालसेन मंदिर बनवाया जहा हर ऐतिहासिक वर्ष मेला लगता है क्षेत्र मे 87 गांव गौर राजपूतो के है जो बाबा कालसेन महाराज को अपना कुल गुरु मानते है तथा पूजा अर्चना करते है प्राचीन मंदिर के अस्तित्व को बनाये रखने के लिए श्री कालसेन बाबा विकास संघ रहडिया तथा ग्रामवासी क्षेत्रबासियो के सहयोग से मंदिर का जीर्णोद्धार कराके मंदिर पर विकास कार्य कराए जा रहे है मेला अध्यक्ष श्री श्याम पाल सिह गौर तथा मेला प्रवंधक डा सतीश सिह गौर ने बताया कि मेले मे आने बाले भारी संख्या श्रद्धालुओ की आस्था को देखते हुए व्यवस्थाएं की गयी है मेले में लाइट पानी तथा भक्तो के ठहरने आदि की समुचित व्यवस्थाए कमेटी द्वारा की गयी है। सैदपुर पेट्रोल तथा रहडिया पुलिस चौकी रास्ते से सीधा वाबा कालसेन मंदिर तक भक्त जा सकते है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023